॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

जून 2018 वर्ष 21, अंक 6 दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110 वार्षिक शुल्क 100 रुपये

विक्रमी सम्वत् 2075 दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756 ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com

एक प्रति का मूल्य 10/-रुपये कुल पृष्ठ 20

देदीप्यमान नक्षत्र-महात्मा हंसराज

❐ आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

आर्य जगत् के देदीप्यमान नक्षत्र, महान ईश्वरभक्त, त्यागी, तपस्वी, कर्मयोगी समाज सुधारक, ऋषि भक्त, डी.ए.वी. के सर्जक, महान शिक्षाविद् महात्मा हंसराज जी स्थितप्रज्ञ महापुरुष थे।

भवति दिवस-वृक्तिः सप्तसप्तिस्तथोष्ठाः,
सतत-कलुष-मध्यो दीव्यन्त्रीन्द्रः क्षपायाम्।
समजनि समवृतिः सर्वथा यो अकलंको,
जयतु स मुनि-नम्यो हंसराजो महात्मा॥

सूर्य केवल दिन में प्रकाश करता है तथा स्वभाव से उष्ठा भी है, चन्द्रमा सकलंक है और रात में प्रकाशित होता है, किन्तु मुनियों द्वारा भी नमनीय महात्मा हंसराज सदा एक रस तथा निष्कलंक थे, अर्थात् सूर्य-चन्द्र से भी श्रेष्ठ थे, अतः उनकी जय हो।

वह एक ऐसे कमल है जो स्वगुणश्रवण की रात्रि में संकुचित हो जाते हैं तो परगुण कथन के दिवस में विस्तृत है। एक बार की बात है कि किसी ने महात्मा हंसराज जी को कहा कि अमुक आदमी ने पाप से खूब पैसा कमाया है, इस पर महात्मा जी कहने लगे, मैं उनके जीवन के विषय में कुछ नहीं जानता, परन्तु इतना तो अवश्य पता है कि उस व्यक्ति ने कॉलिज के लिए 2500 रूपया दान दिया है। किसी व्यक्ति के क्रोध पर जब बात चली तब महात्मा हंसराज जी कहने लगे कि वह व्यक्ति बहुत उत्साही है, कठिनाई को कठिनाई नहीं समझता। क्योंकि कठिनाई को कठिनाई समझना ही बहुत बड़ी कठिनाई है। वे किसी की कभी भी निन्दा नहीं करते थे, अपितु दूसरों के गुणों की प्रशंसा करने में थकते नहीं थे। वे एक सच्चे संत पुरूष थे। महात्मा हंसराज के पुत्र बलराज पर सन् 1611 में लार्ड हार्डिंग पर बम फैंकने के षडयंत्र में शामिल होने के आरोप में मुकदमा चला और अन्त में काले पानी की सजा हुई। जिस दिन अदालत में निर्णय सुनाया जाना था उसी दिन महात्मा जी को जालन्धर में आर्यसमाज के उत्सव पर जाना था। महात्मा जी अदालत में गए, फैसला सुना और वहां से सीधा स्टेशन पहुँचकर जालन्धर रवाना हो गए। जालन्धर में उन्होंने किसी से उस सजा की चर्चा तक नहीं की, सारा आर्यजगत् इस अभियोग के परिणाम की बड़ी उत्सुकता और चिन्ता से प्रतीक्षा कर रहा था। अगले दिन लोगों ने जब अखबारों में क्रान्तिकारी बलराज को कालेपानी की सजा का समाचार पढ़ा, तब सभी हतप्रभ रह गए। हतप्रभ केवल सजा की भयंकरता पर ही नहीं बल्कि महात्मा जी की अद्भुत स्थिप्रज्ञता पर भी। धन्य हैं त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज जी।

महात्मा हंसराज आर्य समाज के प्रमुख आर्यनेता एवं महान समाजसेवी थे। केवल 22 वर्ष की आयु में ही डी.ए.वी. स्कूल के प्रधानाचार्य बने। महात्मा हंसराज जी पर निम्नलिखित पंक्तियाँ चरितर्था होती है-

अपने दु:ख में रोने वाले मुस्कराना सीख ले
दूसरों के दर्द में आँसू बहाना सीख ले॥
जो खिलाने में मजा है आप खाने में नहीं।
जिन्दगी में तू किसी के काम आना सीख ले॥
वीर कर वो काम जिससे तू सदा जिन्दा रहे।
हर किसी को प्यार से अपना बनाना सीख ले॥

महात्मा हंसराज जी का कथन है कि प्रत्येक आर्य का कर्त्तव्य है कि वह अपने नगर, कस्बा, ग्राम तथा कुल में एक बढ़िया उदाहरण बने और वेदों के प्रकाश को सामने रखे जो सहस्त्रों वर्षों के पश्चात् स्वामी दयानन्द ने पुनः प्रसारित किया है। यदि हमारे कर्म ऊँचे होंगे तो हम मुक्ति पाएंगे, अन्यथा नहीं। आर्य समाज की सदस्यता हमें मुक्ति नहीं दिलाएगी। मुक्ति तो हमारे शुभ कर्मो तथा पवित्र आचरण पर निर्भर है। कर्म भी एक यज्ञ है।

महात्मा जी कहा करते थे कि कोई जाति (समाज) अच्छी अवस्था में नहीं रह सकती, जिसके अन्दर सद्भाव न हों। सद्भावों का संचार जातीय उन्नति के लिए प्रथम बात है। कितनी गहरी बात है। उठता है विचार तो उठता है आदमी गिरता है विचार तो गिरता है आदमी। मेरा मानना है कि आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है मनुष्य की चेतना को जगाना। याद रखें आज तक जो कुछ भी समाज में श्रेष्ठ आया है वह सद्विचारों से ही आया है। विचारों की ऊँचाइयों से आया है। आपके भीतर किसी दिन हीन दु:खियों, गरीब या मरीज की सेवा करने का भाव यदि आता है तो वह भी किसी विचार बीज के पैदा होने से ही आता है। वेद का संदेश है-आनो भद्राः क्रतयो यन्तु।

हो कर्म नेक तो दुनियां में इंसान अच्छा है।
समय जो प्रभु याद में गुजरे, तो वह वक्त अच्छा है।
हक के जुड़ जाये अगर दिल की तार, तो दिल अच्छा है।

(शेष पृष्ठ 18 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

महात्मा हंसराज जयन्ती 'समर्पण दिवस' के रूप में आयोजित

महात्मा हंसराज के त्याग को आत्मसात करना ही समर्पण दिवस की सार्थकता

- पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी

'समर्पण दिवस' समारोह के अध्यक्ष एवं आयोजन के प्रेरणा स्रोत डॉ. पूनम सूरी, प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति ने अपने मुख्य सम्बोधन में कहा, ''महात्मा हंसराज पावन-जयंती को 'समर्पण दिवस' के रूप में आयोजित करने का उद्देश्य उन मूल्यों के प्रति स्वयं को पुन: समर्पित करना है जो उस त्यागी महापुरुष ने डी.ए.वी. आंदोलन के स्थापना काल में अपनाए।'' उन्होंने आगे कहा कि यह उनके तप-त्याग और मार्गदर्शन का परिणाम है कि आज डी.ए.वी. के सद्कार्यों की गूंज देश के कोने-कोने में सुनाई देती है। हमारे स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय तथा अन्य गतिविधियों की चर्चा राष्ट्रीय ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होती है। हम देश के उन हिस्सों में भी शैक्षणिक गतिविधियों को संचालित करते हैं, जहां सरकार सहित कोई भी संगठन शिक्षा के क्षेत्र में मौजूद नहीं है। हमारे द्वारा संचालित लगभग 1000 संस्थानों में स्कूल, कॉलेज, तकनीकी संस्थान, विश्वविद्यालय, चिकित्सालय, अनाथालय एवं आश्रम शामिल हैं। हमारे सामाजिक सरोकार भी गहरे हैं। साफ-सफाई, जल-संरक्षण, वृक्षारोपण, पर्यावरण सुरक्षा तथा रक्तदान सम्बन्धी गतिविधियां हमारे संस्थान नियमित रूप से आयोजित करते हैं। देश में जब भी कोई प्राकृतिक आपदा अथवा राष्ट्रीय संकट आता है,

समर्पण दिवस पर आर्य जनता को सम्बोधित करते पदम् श्री डॉ. पूनम सूरी

उत्सव से पूर्व हुए यज्ञ पर मुख्य यजमान के रूप में आशीर्वाद प्राप्त करते पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी एवम् श्रीमती मणि सूरी जी। द्वितीय चित्र में यज्ञ स्थल पर उपस्थित संन्यासी वृन्द् का पुष्प द्वारा सम्मान एवम् अभिवादन करते पदम् श्री डॉ. पूनम सरी जी।

दीप प्रज्जवलित कर समारोह का उद्घाटन करते डॉ. सूरी एवम् साथ में डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति के अधिकारी गण

आर्य समाज और डी.ए.वी. आंदोलन आगे बढ़ कर राहत और पुनर्वास कार्यो में जुट जाते हैं।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति प्रति वर्ष 'महात्मा हंसराज पावन-जयंती समारोह' में वैदिक विद्वानों, आर्य संन्यासियों को सम्मानित करती हैं। इस अवसर पर डी.ए.वी. संस्थानों में शिक्षित-प्रशिक्षित उन पुराने विद्यार्थियों को भी सम्मानित किया जाता है, जिन्होंने अपने-अपने कार्यक्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। डी.ए.वी. संस्थानों के प्रिंसिपलों को उनकी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए 'महात्मा हंसराज सम्मान' प्रदान किए जाते हैं। डी.ए.वी. शैक्षणिक संस्थानों के विद्यार्थियों को उनकी विशिष्ट प्रतिभा प्रदर्शन के

(शेष पृष्ठ 19 पर)

तनाव रहित जीवन

क्या आज के परिवेश में ऐसा सम्भव है क्या? जहाँ सुनो, सभी तनाव ग्रस्त है, मित्रों में, परिवारों में, समाज में, कारोबार में, मन्दिर में, सत्संग में, सभी जगह आपको तनाव ग्रस्त मानव मिल जायेगें। ऐसे उदाहरण भी बहुत है समाज में कि घर के बाहर बोली लगा कर कोई कुछ बेच रहा है, घर से साहब बाहर आए और पूछा क्या बेच रहे हो तो प्रति उत्तर आया तनाव बेच रहा हूँ, घर के साहब ने पूछा कितने में दोगे। ऐसे मानव भी है मोल देकर भी तनाव को आमन्त्रित करते है? आज तनाव एक भयंकर बीमारी का रूप ले चुकी है? तनाव का अगला पड़ाव डिप्रेशन है। आओ इससे सावधान रहे, आओ इससे छुटकारे के बारे में कुछ चर्चा करते हैं।

सर्व प्रथम इस प्रस्थिति से छुटकारे के लिए हमें तन, मन से तनाव मुक्त होने के लिए दृढ़ संकल्प होना पड़ेगा। अपने में विश्वास बनाना होगा कि मैं तनाव मुक्त हो सकता हूँ और हो जाऊंगा। उसके बाद उपाय कार्य करेगें। हमें ऐसे प्रयास करने होगे जिससे कि तनाव उत्पन्न ही ना हो। इसके लिए हमें अपनी जीवन-शैली को बदलता होगा।

छोटी-छोटी बातों से तनावग्रस्त होने के बजाय हमें किसी भी परिस्थिति का मुकाबला करने हेतु तैयार रहना चाहिए, बिल्कुल भी घबराना नहीं चाहिए और विपरीत स्थिति में हमें हमारी श्रेष्ठतम बुद्धि का उपयोग करना चाहिए। यदि कोई समस्या उठ खड़ी हुई है तो ऐसे समय में धैर्य नहीं खोना चाहिए, अपितु पूर्ण विवेक से काम में लेना चाहिए। कोई भी प्रस्थिति ऐसी नहीं जिससे निकलाना सम्भव ना हों, विश्वास रखें।

जीवन में तनाव उत्पन्न ही न हो, इस हेतु दूसरा उपाय यह है कि हमें अपने आपको हमेशा किसी न किसी काम में व्यस्त रखना चाहिए। पुरानी कहावत भी है-'खाली दिमाग शैतान का घर होता है।'

आज हम जो भी काम करते हैं चाहे व्यवसाय करते हों, नौकरी करते हों, बेशक कबाड़ी का काम करते हों, कोई भी काम हो, अपने काम से पूरा प्यार करें व मन लगाकर करें। बड़ा काम भी छोटा हो जाता है। उदाहरण के लिए घर में झाडू भी लगायें तो इतने प्रेम से कि जैसे शेक्सपीयर अपना उपन्यास लिख रहा हो। आपका काम करने का तरीका इतना साफ व बढ़िया हो कि यदि स्वर्ग से देवता भी आ जायें तो यही कहें कि काम करने का ऐसा तरीका कहीं भी नहीं देखा।

हमेशा प्रसन्नचित मुद्रा में ही रहें। क्रोध को चेहरे पर न आने दें। ऑफिस या फैक्ट्री से घर आते ही सबसे पहले अपने पैन्ट, कमीज, कोट उतारकर खूंटी पर टांगते हैं और लुंगी पहनकर अपने आपको बड़ा हलका महसूस करते हैं। ठीक इसी प्रकार घर में प्रवेश करने से पहले दो मिनट के लिए रूकें, ऑफिस में, दुकान में, फैक्ट्री में किसी पर गुस्सा आया हो, किसी बात को लेकर मूड ऑफ हो गया तो वह सब इस कूड़ेदान में डालकर घर में प्रवेश करें। अन्यथा आप कपड़े उतार कर शरीर को तो हलका कर लेंगे, लेकिन माथे पर भयंकर तनाव की लकीरें खिंची ही रहेंगी।

बाहर से लाये गये इस तनाव का सबसे पहला परिणाम पत्नी पर आता है। आप पत्नी पर गुस्सा उतारते हैं और पत्नी अपना गुस्सा बच्चों पर उतारती है। कहाँ तो पत्नी अपने बच्चों से कहती है कि पापा 8 घण्टे बाद घर आएंगे। बड़ा आनन्द आएगा उनसे मिलकर, फल और मिठाई भी लाएँगे। परन्तु यदि पति तनाव लेकर घर आयेगा तो पत्नी अपने मन में यही सोचेगी कि ऐसा आदमी तो 8 घण्टे की जगह 12 घण्टे बाद ही घर आये तो ही बढ़िया रहेगा। कारण, जहाँ पहले स्वर्ग था, तनाव के कारण वहाँ महाभारत प्रारम्भ हो गई। दो मिनट के अन्दर घर नरक बन गया।

हम हमारी तुलना माचिस की एक तीली से कर सकते हैं। जैसे तीली में एक लम्बी सी लकड़ी होती है और ऊपर का भाग गोल होता है, जो कि वह गोला बारूद से भरा रहता है। माचिस का घर्षण होते ही इसमें आग लग जाती है। ठीक वैसे ही हमारा शरीर भी माचिस की एक लम्बी सी तीली जैसा है। हमारी खोपड़ी तीली के ऊपर वाला हिस्सा है। फर्क इतना ही है कि माचिस की तीली के ऊपर वाले भाग, खोपड़ी में बुद्धि व विवेक नहीं है इसलिए जरा से घर्षण से आग का रूप ले लेती है। परन्तु हमारे माथे में तो बुद्धि, धैर्य व विवेक आदि गुण विद्यमान हैं। हमें भी देखना है कि हम भी पत्नी या बच्चों की जरा-सी भूल या गलती पर आगबबूला तो नहीं हो जाते हैं, अगर वास्तव में ऐसा ही होता है तो हमारे पास बुद्धि व विवेक है तो हमें गुस्सा जरा सा भी नहीं आना चाहिए। बल्कि प्यार से, मुस्कुराकर व प्रसन्नचित होकर उन्हें इशारे-इशारे में गलती बता देनी चाहिए। मुँह से एक शब्द भी बोलने की जरूरत क्या है? पत्नी तो घर की लक्ष्मी है। उसे डांटना नहीं चाहिए। वह तो प्यार भरे एक शब्द से ही अपना तन-मन और विपत्ति में अपना धन भी दे देती है और बच्चों पर गुस्सा किस बात का? यदि इस तरह घर में वातावरण बना रहा तो गलती कभी भी आवृत्त नहीं होगी।

हमें हर हाल में, हर परिस्थिति में मुस्कुराते ही रहना चाहिए। यदि पत्नी ने तोरई की सब्जी गलती से कड़वी भी बना दी है तो भी उसे भगवान का प्रसाद समझकर खा लो और हँसते रहो। दूसरे दिन जब वह सब्जी परोसेगी तो उससे पहले खुद चख लेगी। सुबह पलंग पर से उठें तो मुस्कराकर ही उठें। हमें अपने आपमें एक नई ऊर्जा का संचार होता हुआ मिलेगा। जीवन में तनाव से मुक्ति चाहिए तो जिन्दगी भर मुस्कुराते रहो। यही बहुत बड़ी रामबाण औषधि है।

आदमी को हर परिस्थिति में आने वाली समस्याओं और दुःखों का मजबूत मन से डट कर मुकाबला करना चाहिए। क्योंकि मन के हारे हार है, मन के जीते जीत। किसी पुरानी बात को लेकर चित्त प्रसन्न नहीं है या मूड ऑफ हो गया है तो आधा एक घण्टा बढ़िया संगीत सुनें। यदि बांसुरी बजाना आता हो तो सोने में सुहागा होगा। उससे मधुर स्वर या भजन निकालें।

सायंकाल जब आराम-कुरसी पर बैठे हों तो उस समय एक कागज व पेन्सिल लेकर चित्र बनाना आरम्भ करें। हो सकता है शुरु-शुरु में चित्र न बनकर आड़ी-तिरछी लकीरें बनेंगी, लेकिन चित्र बनाते रहे। तात्पर्य यह है कि तनाव को घटाने व कम करने हेतु फालतु समय में कोई चित्र बना सकते हैं, स्वयं को व्यस्त रख सकते हैं।

निष्कर्ष रूप में, जिन्दगी भर के लिए तनाव से मुक्ति व दुःखों से छुटकारा पाना है तो सबसे पहले हर हाल में मुस्कुराते रहना होगा, हर समय अपने आपको व्यस्त रखना होगा। सामने वाला गुस्सा कर सकता है। यह उसका अपना लाइफ-स्टाइल है। पर हमारी जीवन शैली गुस्सा ना आने वाली होनी चाहिए। किसी फिल्म में एक नायक का संवाद था ''तनाव देने का लेने का नहीं!'' हमें तो हर हाल में मुस्कुराते रहना है। तनाव अगर आ भी जाये तो उसे बाहर फेंकना है।

अजय टंकारावाला

सत्संग का महत्व

❒ महात्मा चैतन्यमुनि

स्वर्ग और नरक कहीं स्थान विशेष में नहीं बल्कि यहीं पर हैं। वास्तव में व्यक्ति के सुख की स्थिति ही स्वर्ग है और दु:ख की स्थिति ही नरक है। सुख-दु:ख भी हमारे अपने ही कर्मों के आधार पर मिलता है। कर्मों का आधार हमारे अच्छे या बुरे विचार होते हैं तथा व्यक्ति का अच्छा या बुरा बनना सत्संग या कुसंग के आधार पर होता है। इसीलिए चाणक्य जी का कथन है- **सत्संग: स्वर्गवास:** अर्थात सत्संग ही स्वर्ग का निवास है। इसलिए महामना शंकराचार्य जी सत्संग की महत्व के बारे में कहते हैं-

संगत्वे नि:संगत्वं नि:संगत्वे निर्मोहत्वम्।
निर्मोहत्वे निश्चलत्वं निष्ठचलत्वे जीवन्मुक्त:।।

अर्थात सत्संग से विवेक हो जाने पर व्यक्ति सांसारिक पदार्थों में न फंसकर नि:संग हो जाता है, संसार से नि:संग होने पर मोह दूर हो जाता है तथा मन की स्थिरता हो जाती है, और जब मन परमात्मा की भक्ति में स्थिर हो जाता है तक व्यक्ति संसार सागर से तर जाता है। इसीलिए वे आगे आदेश देते हैं-**संग: सत्सु विधीयताम्।** अर्थात सदा सज्जनों का सत्संग करो। समस्त ग्रन्थों में सत्संग का अत्यधिक महत्व बताया गया है। सत्संग द्वारा बड़े से बड़े पापी भी धर्मात्मा बनते हुए देखे गए हैं। कहते हैं कि एक बार आर्यसमाज के तर्कशिरोमणि तथा प्रसिद्ध शास्त्रार्थ महारथी स्वामी श्रद्धानन्द जी का दिल्ली में एक सत्संग में प्रवचन हो रहा था। रोहतक से तीन चोर चोरी करने के लिए दिल्ली आए हुए थे मगर क्योंकि अभी गहरी रात होने में कुछ समय शेष था इसलिए वे भी केवल समय गुजारने के लिए स्वामी जी के सत्संग में एक ओर खड़े होकर उनका प्रवचन सुनने लगे। उस दिन स्वामी जी महाराज कर्म फल के ऊपर बोल रहे थे। अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म युभायुभम् अर्थात व्यक्ति को अपने अच्छे या बुरे कर्मों को निश्चित रूप से फल भोगना ही पड़ता है की स्वामी जी महाराज ने ऐसी सटीक और मार्मिक व्याख्या की कि उन चोरों का अन्तरमन भी हिल गया। वे अपने किए पर मन ही मन बहुत पछताने लगे और उन्हें अत्यधिक ग्लानि का अनुभव होने लगा। उन्होनें चोरी करने का विचार कुछ देर के लिए स्थगित कर दिया और स्वामी जी का प्रवचन समाप्त होने पर उनके पास जाकर कहा, 'स्वामी जी हम आपसे कुछ बात करना चाहते हैं।'

'बोलिए? स्वामी जी ने सहजता से कहा। 'यहां नही हम एकान्त में आपसे कुछ पूछना चाहते हैं।' चोरों ने कहा।

'चलिए...' स्वामी जी ने एकदम खड़े होते हुए कहा।

चोर उन्हें अपने साथ लेकर बहुत एकान्त स्थान में पंहुच गए तो स्वामी जी को कुछ शंका हुई कि कहीं ये लोग उन्हें किसी प्रकार की कोई हानि तो नहीं पंहुचाना चाहते हैं। फिर भी स्वामी जी आश्वस्त होकर उनके साथ लगातार चलते रहे। और भी अधिक निर्जन स्थान पर ले जाकर उन्होनें स्वामी जी को एक ऊंचे स्थान पर बिठाया और स्वंय उनके चरणों के पास बैठकर उनसे पूछा, 'स्वामी जी क्या आप सच कह रहे थे कि किए हुए बुरे कर्मो का फल भोगना ही पड़ता है?'

'हां बिल्कुल। परमात्मा की न्याय व्यवस्था में व्यक्ति को बुरे कामों का कठोर से कठोरतम दण्ड भोगना पड़ता है। कोई भी कर्म बिना भोगे कभी समाप्त नहीं होता है और परमात्मा को किसी प्रकार का धोखा भी नहीं दिया जा सकता है।' स्वामी जी ने कहा।

'स्वामी जी हम रोहतक के निवासी हैं तथा चोरी करने के लिए दिल्ली आए थे मगर आपके सत्संग में आपका प्रवचन सुनकर हमारा मन अब चोरी करने को नहीं कर रहा है।'

'बहुत अच्छी बात है। जो पाप आप लोगों ने अब तक किए हैं वह तो भोगने ही पड़ेंगें मगर अब प्रायश्चित करके आगे पुण्य कर्मों के करने में अपना जीवन लगा तो आप चोर से महात्मा बन जाएंगें।' स्वामी जी ने कहा।

उन्होनें स्वामी जी के सामने ही चोरी छोड़ने का संकल्प किया और स्वामी जी को दूध पिलाकर सुरक्षित उनके स्थान पर पंहुचाया। स्वामी जी के सत्संग से इनके जीवन में आमूलचूल परिवर्तन हो गया तथा बाद में अपने जीवन में इन तीनों ही लोगो ने बहुत उत्तम कार्य किए। इन महानुभावों का नाम था-चौधरी पीरूसिंह, लाला इच्छा राम और चौधरी जुगललाल जी। हृदय परिवर्तन के बाद चौधरी पीरू सिंह जी ने अपनी तीस बीघा जमीन दान में देकर मटिण्डू नामक स्थान में स्वामी श्रद्धानन्दजी द्वारा एक गुरूकुल की स्थापना कराई और उस गुरूकुल को गुरूकुल कांगड़ी की शाखा बनाया। दूसरे लाला इच्छाराम जी ने अपने दोनों बच्चों को गुरूकुल कांगड़ी में पढ़ाया और इनके दोनों बेटों ने समाज सेवा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनके पहले बेटे का नाम पं.हरिश्चन्द्र विद्यालंकार था जो वेदों के प्रकाण्ड विद्वान बनें तथा उनका वेद भाष्य अत्यधिक महत्वपूर्ण है। उनके दूसरे बेटे थे सुप्रसिद्ध समाज सेवक और हिन्दू नेता प्रो.राम सिंह जी, जो आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वर्षो प्रधान भी रहे तथा गुरूकुल कांगड़ी के कुलपति भी रहे। तीसरे व्यक्ति श्री चौधरी जुगल लाल जैलदार जी ने एक अंग्रेज भक्त जिलाधीश को उसके मुंह पर ही फटकारा था कि आपके न्यायालयों में न्याय नहीं होता है।

सत्संग से अज्ञानता दूर होकर व्यक्ति के भीतर ज्ञान का प्रकाश होता है। सत्संग ही व्यक्ति के सब प्रकार के मानसिक रोगों की औषधि है। यह सत्संग ही सच्चा तीर्थ है क्योंकि यह व्यक्ति को पतनावस्था से मुक्त करने वाला है। सत्संग से ही व्यक्ति को आत्मिक शान्ति प्राप्त होती है। इसलिए जब कभी व्यक्ति को किसी भी प्रकार का दु:ख हो तो सत्संग ही उसका एकमात्र उपचार है। कैसे व्यक्ति का संग करना चाहिए इस सम्बन्ध में महाभारत में एक स्थान पर भीष्म पितामह युधिष्ठिर से बहुत ही सुन्दर बात कहते हैं-

अतृप्यन्तस्तु साधूनां य एवागमबुद्धय:।
परमित्येव सन्तुष्टास्तानुपास्स्व च पृच्छ च।।
कामार्थौ पृष्ठत: कृत्वा लोभमोहानुसारिणौ।
धर्म इत्येव सम्बुद्धास्तानुपास्स्व च पृच्छ च।।

जो साधु संग के लिए नित्य उत्कण्ठित रहते हों, सत्संग से कभी तृप्त न होते हों, जिनकी बुद्धि आगम-प्रमाण को ही श्रेष्ठ मानती हो, जो सदा सन्तुष्ट रहते हो तथा लोभ-मोह की ओर खींचने वाले अर्थ और काम की उपेक्षा करके धर्म को ही उत्तम समझते हों, ऐसे महापुरूषों का संग करो और उनसे अपना सन्देह पूछो। महामना भीष्म जी का यह उपदेश बहुत ही सार्थक एवं व्यवहारिक है। सत्संग संजीवनी बुटी है मगर कोई विरला ही व्यक्ति इसका पान कर पाता है। ऐसे व्यक्तियों की संगति से व्यक्ति का यह लोक और परलोक निश्चित रूप से संवर जाता है इसलिए सत्संग के लिए व्यक्ति को सदा-सर्वदा लालायित रहना चाहिए क्योंकि यही व्यक्ति के सुख-दु:ख अर्थात स्वर्ग या नरक का आधार है। कबीर जी की उक्ति द्रष्टव्य है-

कबीरा संगत साधु की,ज्यों गन्धी की बास।
जो कुछ गन्धी दे नहीं, तो भी बास सुबास।।

-महादेव,सुन्दरनगर-175018 (हि.प्र.)

प्रभु की वन्दना

❒ स्व. प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह॥

ऋ. 7.41.2

अन्वयः-प्रातः जितं भगम् उग्रं अदितेः पुत्रं वयं हुवेम।

यः विधर्ता, यम् आध्रः चित् मन्यमानः (भगं भक्षिइत्याह), 'तुरः चित्' राजाचित् यं भगं भक्षि-इति आह।

वयं प्रातः जितं हुवेम-अर्थात् प्रातः काल की इस पवित्र वेला में हम जयशील, सदा विजयी रहने वाले, परमेश्वर की स्तुति करते हैं। भगवान् सदा सर्वदा ही विजयी बने रहते हैं, अपने विरोध में आचरण करने वालों को सदा पराजित कर देते हैं। परमेश्वर सदा सर्वदा विजयी ही बने रहते हैं, कभी पराजित नहीं होते, इसका क्या अभिप्राय है? परमेश्वर न कोई मल्ल पहलवान कुश्ती लड़ने वाले हैं जो अपने प्रतिद्वन्द्वियों को हरा देते हैं। परमेश्वर न कोई राजा-महाराजा हैं जो अपनी सेना सजाकर दूसरे राजाओं से युद्ध करते हैं, और उन्हें पराजित करके विजयी बनते हैं, या युद्ध को जीत लेते हैं। जब परमेश्वर न कोई पहलवान है, न ही कोई राजा या सेनापति हैं, तो प्रभु के जयशील होने का क्या अर्थ है?

भगवान् के जयशील होने का अर्थ है उनके नियम, विधान (ऋत्-सत्य) का विजयी होना। संसार के बहुसंख्यक लोग परमेश्वर के नियम के विपरीत आचरण करते हैं। जैसे किसी राज्य के नियम विधान के वितरीत आचरण करने वाला राज्य का शत्रु है, उसी तरह परमेश्वर के नियम विधान का उल्लंघन करने वाला परमेश्वर का विरोधी है। सामान्य लोग परमेश्वर के नियमों को प्रकृति का नियम कहते हैं। प्रकृति का नियम कहें या परमेश्वर का नियम कहें, बात एक ही है। स्वास्थ्य के नियम परमेश्वर का नियम कहें, बात एक ही है। स्वास्थ्य के नियम परमेश्वर के नियम हैं। उनका उल्लंघन करने वाला कभी स्वस्थ नहीं रह सकता। इसी प्रकार जल का गुण शीतलता है और अग्नि का गुण उष्णता है। यही परमेश्वर का विधान है। कोई इसे उलट नहीं सकता है। हमारी जठराग्नि परमेश्वर के नियम से भोजन पचाने का कार्य करती है। सदाचारी, ब्रह्मचारी, तेजस्वी स्वस्थ होता है। इसके विपरीत कोई कुछ नहीं कर सकता। इसी प्रकार पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण या अग्नि का ऊपर उठना या जल का नीचे जाना, सभी परमेश्वर के नियम हैं और परमेश्वर के ये सभी नियम विरोधी को डुबाकर विजयी बन जाते हैं।

मनुष्य के मन में विजय वृत्ति तथा पराजयवृत्ति दोनों उठती है। विजयभाव से उत्साह उल्लास बढ़ता है। हम अपने मन में विजय-भाव का चिन्तन करें तो हमारी क्षमता बढ़ जाती है। विजयभाव सकारात्मक है। हम अपनी विजय सफलता के प्रति आश्वस्त हैं। जयशील भगवान हमारे साथ हैं।

'वयं जयेम त्वया युजा' (ऋ 1.102.4) जब प्रभु हमारे साथ है तो हम अवश्य जीतते हैं।

हम जयशील परमेश्वर की स्तुति करते हैं। इस स्तुति का चरितार्थ है कि हम परमेश्वर के नियम विधान, ऋत-सत्य के अनुकूल अपने जीवन में आचरण करते रहें और अपनी जीवन यात्रा में सदा सफल वयं भगम् उग्रम हुवेम-अर्थात् हम भजनीय भजन करने योग्य, उग्र, तेजस्वी, तेजस्वरूप परमेश्वर की स्तुति करते हैं। हमने पूर्व मन्त्र में भजनीय पर थोड़ा सा विचार किया है। संसार में अपनी-अपनी प्रकृति के अनुकूल, अपनी-अपनी श्रद्धा के अनुकूल, मनुष्य भजन या स्तुति करता है। अच्छे लोग परमेश्वर की, देवगुणों की स्तुति करते हैं। पापी लोग भूत-प्रेत, यक्ष-राक्षस की भी स्तुति करते हैं। हमारे लिए भजनीय स्तुति करने योग्य परमेश्वर ही हैं। न किसी की मजार, न कोई भूत-प्रेत, न कोई कब्र, न कोई चबूतरा, न गाजीमियां की लहबर, किसी की भी स्तुति नहीं करनी चाहिए, किसी को भी परमेश्वर के बराबर या बड़ा नहीं मानना चाहिए। एक मात्र भजनीय, उपासनीय स्तुति करने योग्य परमेश्वर ही हैं।

मन्त्र में उग्र परमेश्वर की स्तुति का वर्णन है। उग्र का अर्थ है तेजस्वी। परमेश्वर तेज स्वरूप हैं और अपने भक्तों को, उपासकों को तेज देते भी हैं 'तेजोऽसि तेजो मयिधेहि'। परमेश्वर तेजस्वरूप हैं और हमें तेज धारण भी कराते हैं।

उग्र का एक और अर्थ है कि तेजस्वरूप परमेश्वर दुष्टों को दण्ड देते हैं। कैसा भी बलवान दुष्ट हो उसे अपने कुकर्मो पापों का दण्ड भगवान् देते ही हैं। तेजस्वी होने का एक यह भी फल है कि तेजस्वरूप व्यक्ति की उपस्थिति में दुष्ट दुष्टता करने में डरता है। तेजस्वरूप भगवान की स्तुति करने वाला न स्वयं दुष्टता करेगा न तेजस्वी भक्त के सम्मुख ही दुष्ट की दुष्टता चलेगी। एक और भाव उग्र के साथ जुड़ा हुआ है-उग्र, तेज, उत्साह, उल्लास, आशा, सफलता जैसे सकारात्मक मनोभाव एक केन्द्र में साथ-साथ उत्पन्न होते हैं। इनके विपरीत हताशा, असफलता, पराजित वृत्ति, उत्साहीनता आदि मन के अन्य केन्द्र पर एक साथ उत्पन्न होते हैं।

यः विधर्ता (तम्) उदितेः पुत्रं वयं हुवेम-

अर्थात् जो अदिति का पुत्र विधर्ता है अर्थात् सारे ब्रह्माण्ड को धारण करने वाला है और रक्षा करने वाला है, हम उसकी स्तुति करते हैं। अदिति सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को कहा गया है। ऋग्वेद का प्रमाण है-

'अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः।
विश्वेदेवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥''

(ऋ. 1.89.10)

इस मन्त्री में द्यौलोक, अन्तरिक्षलोक, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को अदिति कहा है और परमेश्वर इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के धारण और पोषण करने वाले हैं इसीलिए भगवान को विधर्ता कहा गया है।

अदिति का अर्थ निरन्तरता भी है (दो अवखण्डन) प्रभु अपने भक्त की भावना की सतत निरन्तर रक्षा करते हैं, उसका पालन करते हैं।

इस मन्त्र में परमेश्वर को पुत्र कहा गया है। निरूक्त के अनुसार 'पुरु त्रायते' (निः 2.11) रक्षा करने वाला परमेश्वर इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का पिता भी है, पुत्र भी है, अखिल ब्रह्माण्ड का रक्षक और पालक भी है।

प्रस्तुत मन्त्र में परमेश्वर को विधर्ता अर्थात् धारण और पालन करने वाला तथा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का पुत्र अर्थात् रक्षा करने वाला कहा गया है और आदेश यह है कि ऐसे धारण-पालन करने वाले तथा रक्षा करने वाले परमेश्वर की हम स्तुति करें।

हे भक्त! आध्रः चित् यम् भक्षिः- (यः आध्रः चित् तम्)-आध्रः

का अर्थ है 'धारण करने वाला' परमेश्वर सारे संसार को धारण करते हैं इसलिए परमेश्वर आध्र: हैं। परमेश्वर को भक्त अपने हृदय में धारण करता है, इसलिए भी परमेश्वर आध्र: हैं। चित् का अर्थ है निश्चित रूप से और निश्चय ही। इस प्रकार आध्र: चित् का अर्थ हुआ जो परमेश्वर इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को निश्चय ही धारण करता है और परमेश्वर निश्चय रूप से भक्तों के द्वारा हृदय में धारण किया गया जाता है।

अब थोड़ा सा विचार परमेश्वर के धारणकर्त्ता धर्त्ता रूप पर विचार करते है। परमेश्वर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को, पृथ्वी, अन्तरिक्ष, देवलोक सभी लोक लोकान्तरों को धारण करता है। हमारे परिचय में किसी मकान को उसकी नींव धारण करती है या मकान के खम्भे धारण करते हैं। इस रूप में परमेश्वर अपने सिर पर या शेषनाग अपने फन पर या बैल अपनी सींग पर नहीं धारण करता हैं। परमेश्वर अपने ऋत और सत्य पर धारण करते हैं। जैसे समाज के नियम विधान से समाज में शान्ति सुव्यवस्था बनी रहती है, उसी प्रकार परमेश्वर के नियम विधान सृष्टि का निर्माण करते हैं, उसको धारण करते है और समय आने पर सृष्टि का प्रलय करते हैं। यह सब परमेश्वर के धारण पालन के रूप हैं। ऐसे परमेश्वर के भजन करने का उपदेश है।

भक्त मनुष्य भी परमेश्वर को अपने हृदय में धारण करते हैं। मनुष्य वस्त्र धारण करता है, अपने रंग रूप को सजाकर रूप धारण करता है। मनुष्य के धारण करने के और भी रूप हो सकते हैं। किन्तु परमेश्वर को हृदय में धारण करने का दूसरा ही अर्थ है। भक्त परमेश्वर के गुणों का, परमेश्वर की कृपा एवं दया का स्मरण करता है, यह परमेश्वर का भजन है और यही परमेश्वर को हृदय में धारण करना है।

य: मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चित् (तम्):-मन्यमान: का अर्थ है सर्वज्ञ, सबको जानने वाला। तुरश्चित् का अर्थ है शीघ्रकारी, अच्छे बुरे का निश्चित रूप से फलदाता। राजा का अर्थ है सम्पूर्ण विश्व का अधिष्ठता अर्थात् शासन और व्यवस्था करने वाला विश्वपति, संसार का राजा परमेश्वर दुष्टों को दण्ड और सज्जनों को सम्मान देने वाला है। परमेश्वर सर्वज्ञ हैं वे जड़-चेतन, आस्तिक-नास्तिक सबको जानते हैं। अपने भक्त को भी जानते हैं। भक्त के कार्य व्यवहार, हृदय को भी जानते हैं। अत: तदनुकूल सबके कर्मों की व्यवस्था करते हैं। परमेश्वर तुरश्चित् राजा-धनी-निर्धन, अमीर-गरीब, शासक-शासित, दुष्ट और सज्जन सबको जानते हैं, इसीलिए सबकी समुचित व्यवस्था, दण्ड-पुरस्कार की व्यवस्था करते हैं।

इस मन्त्र में आदेश दिया गया है-'भक्षि इति आह' अर्थात् ऐसे गुणों से सम्पन्न परमेश्वर का भजन करो। मनुष्य को उचित है कि वह परमेश्वर की उपासना अवश्य करें।

प्रात: काल की पवित्र बेला में भगवान के जयशील, तेजस्वी, न्यायकारी, पालनकर्त्ता आदि रूपों का ध्यान करके हम अपने जीवन को परमेश्वर के गुणों से भावित करें, साथ ही प्रात: काल ही दिन का कार्य आरम्भ करने से पूर्व अपने दिन को सुदिन एवं सफल बनाने का संकल्प करें, दृढ़ निश्चय करें।

- साभार प्रभात वन्दन

टंकारा समाचार के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

-प्रबन्धक

गौ-दान : महा-दान

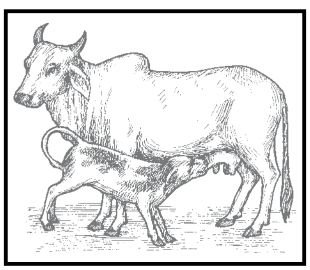

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से **20,000/-** रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

सत्संग क्या और इससे लाभ

❐ मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

सत्संग एक प्रचलित शब्द है जिसका प्राय: सभी लोग बातचीत व परस्पर व्यवहार में प्रयोग करते है। आजकल किसी धार्मिक कथा आदि में जाने को ही सत्संग मान लिया जाता है। सत्संग का वास्तविक अर्थ क्या है, इस पर कम लोग ही ध्यान देते हैं। सत्संग दो शब्दों सत् और संग से मिलकर बना है। सत् का अर्थ सत्य है और संग का अर्थ जहां एक से अधिक लोग परस्पर मिलकर बैठे व सत्य ज्ञान से युक्त विचारों को सुनें। इस प्रकार से सत्य विचार व सत्य चर्चा जहां हो वहां उपस्थित होना व उस चर्चा को सुन कर अपने विवेक से उसे जानना, समझना और उसकी परीक्षा कर सत्य को ग्रहण करना सत्संग कहलाता है। यदि सत् शब्द पर और गहराई से विचार करें तो यह शब्द तीन सत्ताओं के लिए प्रयोग में लाया जाता है। एक है ईश्वर, दूसरा जीवात्मा और तीसरा प्रकृति। इन तीनों की चर्चा करना और इनके सत्यस्वरूप का ज्ञान प्राप्त करना भी सत्-संग कहलाता है। ईश्वर की चर्चा करते हैं तो हमें ज्ञात होना चाहिये कि ईश्वर किसे कहते हैं, उसका स्वरूप कैसा है, उसके गुण, कर्म व स्वभाव किस प्रकार के हैं, उसको जानना क्यों आवश्यक है, उसका ज्ञान प्राप्त करने पर हमें क्या लाभ होता है, उसकी प्राप्ति किस प्रकार की जा सकती है, उसको क्या किसी ने कभी प्राप्त किया है और यदि हम उसे प्राप्त कर लें तो हमें क्या क्या लाभ होंगे? ऐसे अनेक प्रश्न हैं जिनका ज्ञान सत्यस्वरूप ईश्वर को जानने व उससे लाभ उठाने के लिए आवश्यक है। आजकल जो धार्मिक कथायें आदि होती हैं उन्हें सत्संग इसलिये नही कहा जा सकता क्योंकि वहां ईश्वर व जीवात्मा आदि का सत्य ज्ञान मिलने के स्थान पर अज्ञान, अविद्या, कुरीतियां, मिथ्याज्ञान, कुपरम्परायें आदि बताई जाती हैं। श्रोताओं को क्योंकि धर्म की पुस्तकें वेद व धर्मशास्त्र का ज्ञान नहीं होता इसलिए वह चालाक व चतुर तथाकथित धर्माचार्यो के जाल में फंस जाते हैं। यह लोग तो श्रोताओं व भक्तों से धन लेकर सुखी व भोग का जीवन व्यतीत करते हैं जबकि इनके अनुयायी अभावों से युक्त दु:खी जीवन व्यतीत करते हैं और उनका आध्यात्मिक विकास भी देखने को नहीं मिलता। अत: सत्संग के यथार्थ स्वरूप को समझ कर उसके अनुरूप ही हमें व्यवहार व उपासना आदि कार्य करने चाहियें।

सत्संग के लिए एक अच्छा साधन स्वाध्याय है। स्वाध्याय सद् ग्रन्थों का ही किया जाता है। सद् ग्रन्थों में सबसे उच्च स्थान पर ईश्वरीय ज्ञान वेद प्रतिष्ठित है। वेद की भाषा संस्कृत है जो ईश्वर की अपनी भाषा है। ईश्वर ने अपनी श्रेष्ठ भाषा संस्कृत ही मनुष्य को सृष्टि के आरम्भ काल में वेदज्ञान के साथ प्रदान की थी। वेदज्ञान के विषय में ऋषि दयानन्द की घोषणा है कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है और इसका पढ़ना व पढ़ाना तथा सुनना व सुनाना सब मनुष्यों वा श्रेष्ठ पुरूष आर्यो का परम धर्म है। संसार की कोई भी धर्म पुस्तक ऐसी नहीं है जिसमें वेदों के समान उच्च कोटि का ज्ञान हो जिससे मनुष्य की आत्मा भ्रान्तियों व शंकाओं से मुक्त हो सके जैसी वेदाध्ययन से होती है। महर्षि दयानन्द की कृपा से वेदों का हिन्दी में भाष्य उपलब्ध है जिसे हिन्दी जानने वाला कोई भी मनुष्य पढ़ व जान सकता है। वेदों का जो भी मनुष्य अध्ययन व पाठ करते हैं उनकी अविद्या व दुगुर्ण दूर हो जाते हैं, उन्हें ईश्वर के सत्य स्वरूप सहित अपने कर्तव्यों का ज्ञान भी हो जाता है। वेद मन्त्रों के उच्चारण व उनका ज्ञान होने से यह भी एक प्रकार की ईश्वर की स्तुति व उपासना होती है। वेदों का स्वाध्याय व अध्ययन भी एक प्रकार से ईश्वर के सत्य स्वरूप की स्तुति व उसकी उपासना है जिससे अध्येता की अविद्या व अज्ञान का नाश होता है और मनुष्य राक्षसी प्रवृत्तियों काम, क्रोध, दुराचार, अज्ञान, लोभ, अन्याय व अत्याचार आदि से छूट कर देवत्व को प्राप्त होता है। इसी कारण से वेद संसार में सबसे अधिक महत्वपूर्ण व मनुष्यों के लाभकारी पुस्तक हैं और वेदाध्ययन संसार में श्रेष्ठ सत्संग कहलाता है क्योंकि इसी से ईश्वर का ज्ञान व प्राप्ति होती है।

वेदाध्ययन से पूर्व यदि हम ऋषि दयानन्दकृत सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ का अध्ययन कर लें तो इससे भी अविद्या दूर होती है। अविद्या दूर होने के साथ मनुष्य इस ग्रन्थ का अध्ययन कर विद्या से युक्त अर्थात् विद्वान बन जाता है। विद्वान मनुष्य ही देवता कहलाता है। इसके लिए यह आवश्यक होता है कि विद्वान मनुष्य अविद्या व अज्ञान का कोई कार्य न करे और अपने आचरण को वेदानुसार ही करे। वेद, सत्यार्थप्रकाश और ऋषिकृत ग्रन्थों के स्वाध्याय व अध्ययन ही सही अर्थो में सत्संग होता है। अत: संसार के सभी रहस्यों व ईश्वर, जीव व प्रकृति संबंधी सभी प्रकार के ज्ञान को प्राप्त करने के लिये मनुष्यों को वेद और सत्यार्थप्रकाश सहित ऋषिकृत ग्रन्थों, दर्शन व उपनिषद आदि शास्त्रों का अध्ययन अवश्य करना चाहिये।

सत्संग वह होता है जहां वेदों का विद्वान वक्ता के रूप में है। वह विद्वान लोभ रहित हो, श्रोताओं से किसी प्रकार से धन का इच्छा व लोभ न करता हो, बातें बना कर धन या सहायता की याचना न करे अपितु अपने श्रोता व श्रद्धालु का ईश्वर व आत्मा विषयक ज्ञान देने में तत्पर हो। वह अपने श्रोता व भक्त को ईश्वर व आत्मा का ज्ञान कराकर उसे उपासना सिखाये जिससे श्रोता व भक्त ईश्वर की सही विधि से उपासना कर आत्म साक्षात्कार व ईश्वर साक्षात्कार के लक्ष्य को प्राप्त कर ले। ईश्वर व आत्मा सत्य हैं अत: इन दोनों का मिलना ही सत्संग व योग कहलाता है। स्वाध्याय करते हुए भी अध्ययनकर्ता ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव से एक सीमा तक एकाकार हो जाता हैं। उसे ईश्वर के स्वरूप व अपनी आत्मा के स्वरूप का ज्ञान हो जाता है। ईश्वर व आत्मा का स्वरूप जान लेने पर ईश्वर की भक्ति व उपासना स्वत: करने का मन होता है। इसके लिए वेद मन्त्रों का अर्थ ज्ञान सहित उच्चारण, वेदाधारित अध्यात्म विद्या के ग्रन्थों का अध्ययन भी सत्संग व उपासना में ही सम्मिलित होता है। सत्संग व उपासना दोनों का उद्देश्य व लक्ष्य समान है। दोनों के द्वारा हम ईश्वर व आत्मा की चर्चा व चिन्तन करते हुए ईश्वर से एकाकार होने का प्रयत्न करते हैं। ईश्वर व आत्मा दोनों का पृथक अस्तित्व व सत्ता है। दोनों मिलकर कभी एक नहीं होते परन्तु उपासना से दोनों में समीपता व निकटता स्थापित हो जाती है और जीवात्मा को ईश्वर के आनन्द का अनुभव व आनन्द की प्राप्ति हो जाती है। सत्संग वस्तुत: वैदिक विधि से उपासना करने का ही नाम है। इसलिये कि उपासना में ही आत्मा व ईश्वर का मेल होता है। आत्मा को ईश्वर से मिलाने का उपासना के अतिरिक्त अन्य कोई उत्तम साधन नहीं है।

सत्संग से लाभ क्या होते हैं? सत्संग अर्थात् ईश्वर के संग से जीवात्मा व मनुष्य को अनेक लाभ होते हैं। इससे आत्मा के दुर्गुण,

दुर्व्यसन और दु:ख दूर होते हैं। आत्मा का ज्ञान निरन्तर बढ़ता जाता है। ईश्वर के सान्निध्य में रहने से दु:ख दूर तो होते ही हैं, आनन्दस्वरूप ईश्वर के सान्निध्य में आनन्द की अनुभूति होती है। यदि ऐसा न होता तो ऋषि दयानन्द और अन्य वैदिक विद्वान उपासना पर सबसे अधिक बल न देते। उपासना से मनुष्य को ईश्वर से सत्प्रेरणायें भी प्राप्त होती हैं जिनके मूल में परोपकार व दूसरों की सेवा व सहायता की भावना होती हैं। इन प्रेरणाओं के अनुरूप कर्म व आचरण करने से मनुष्य शुभ कर्मों का संचय करता है जिससे उसे इस जीवन व पर जन्म में सुख व उन्नति प्राप्त होती है। परजन्म में उन्नति का अर्थ है कि हम वर्तमान मनुष्य जीवन में जिस स्थिति में हैं, परजन्म में भी हमें मनुष्य जन्म मिलेगा और वर्तमान से अधिक सुख की स्थिति प्राप्त होगी। सत्संग व उपासना इन दोनों से मनुष्य का ज्ञान बढ़ता है। ज्ञानियों व सदाचारियों की संगति प्राप्त होती है। इससे भी मनुष्य को आशातीत लाभ होते हैं। सत्संगी व उपासना करने वाला मनुष्य सन्ध्या, देवयज्ञ अग्निहोत्र सहित पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ और बलिवैश्वदेवयज्ञ भी करता है। यह सब उसे लोक में यश प्राप्त करने के साथ स्वावलम्बी व सुखी बनाते हैं। सत्संग से लाभ ही लाभ है। दुर्व्यसनों से मुक्ति मिलना भी कम बड़ा लाभ नहीं है। अत: मनुष्य को अपने विवेक से ज्ञानियों की संगति सहित स्वाध्याय एवं ईश्वरोपासना में अपना अधिक से अधिक समय व्यतीत कर जीवन को सन्मार्ग पर चलाना चाहिये। यथार्थ सत्संग मनुष्य को मोक्ष द्वार पर ले जाकर मोक्ष प्राप्त भी करा सकता है। मोक्ष प्राप्ति ही मनुष्य जीवन का चरम लक्ष्य है। अत: मुमुक्षुओं को सत्संग अवश्य करना चाहिये।

-196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-फोन: 09412985121

प्रभात-वन्दन

अग्नि-देव तेरी करूँ पहिले भोर पुकार।
तुही इन्द्र तू मित्र है तुही वरूण करतार।।1।।
तेरी ही इस विश्व में व्याप रहीं दो धार।
खेंचनहारी एक है एक विसर्जन-हार।।2।।
भक्तों का भजनीय तू, तू पूषा दातार।
तू अनन्त इस विश्व में विद्या का भण्डार।।3।।
तुही सोम-रस से भरा दाह मिटावन-हार।
तुही रूद्र होकर रहा दुष्टों का संहार।।4।।

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर **7000/-**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं

अथवा

गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यो की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

-: निवेदक :-

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

आयुष्मान् भव, एक जीवन-दर्शन

❒ श्री रामनिवास 'गुणग्राहक'

जीवन के साथ मृत्यु का ऐसा अटूट व शाश्वत सम्बन्ध है कि एक के बिना दूसरे की कल्पना भी नहीं की जा सकती। गीता की भाषा में कहें तो-'जातस्य हि ध्रुवो मृत्युध्रुवं जन्म मृतस्य च'। अर्थात् जिसने जन्म लिया है, उसकी मृत्यु निश्चित है और जिसकी मृत्यु हुई है उसका दूसरा जन्म भी निश्चित है। इस तथ्य को भली-भांति जानते-मानते हुए भी मनुष्य जीवन भर मृत्यु के भय से त्रस्त रहता है। मृत्यु चाहे कितनी भी सुनिश्चित हो, जीवित रहने की चाह भी इतनी प्रबल है कि हम मृत्यु के पंजे से भी जीवित बचने-बचाने के लिए एड़ी से चोटी तक का बल लगा देते हैं। मनुष्य का वश चले तो इस ब्रह्माण्ड से मृत्यु शब्द को ही मिटा डाले। कुछ क्षणों में सम्पन्न हो जाने वाली मृत्यु नामक घटना हमारे कई दशकों तक फैले जीवन को पीड़ित, प्रताड़ित करती रहती है। अपनी एक लोकप्रिय काव्य रचना में मैंने कुछ वर्ष पूर्व लिखा था-

जगत् में जीने की चाहत मृत्यु से डरती रही है।
जिन्दगी की बेल यूं प्रतिपल यहां मरती रही है॥

आज हम सौ वर्ष की आयु को पूर्णायु मानकर चलते हैं। वेद में तो-'जीवेम शरद: शतम्' के साथ ही 'भूयश्च शरद: शतात्' की प्रार्थना है, अर्थात् हम सौ वर्ष से भी अधिक जीयें। महाभाष्य के प्रणेता महर्षि पतंजलि लिखते हैं-'किं पुनरद्यत्वे? य: सर्वथा चिरं जीवति वर्षशतं जीवति'।' (महा. प्रथमाह्निक) अर्थात् आजकल के लिए क्या कहें, कोई अधिक जीता है तो सौ वर्ष जीता है। वर्तमान में हमारी स्थिति कुछ अधिक दयनीय होती जा रही है। 40-45 वर्ष पार करते ही हमें नियमित चिकित्सकों की राय लेनी पड़ती है। 50-60 के बाद की जितनी आयु भोजन पर निर्भर रहती है उससे कहीं अधिक दवाईयों पर निर्भर रहने लगी है। ऐसी स्थिति में कई बार जब हमारे कुछ बन्धु वृद्ध जनों का अभिवादन करते हैं और पुराने रंग-ढंग के वृद्ध जन लम्बी आयु का आशीर्वाद देते हैं तो उनके मुख से निकलता है-अरे दादा जी, क्या करेंगे लम्बी आयु का। दवाईयों के सहारे व परिवार वालों की उपेक्षा के चलते लम्बी आयु का आशीर्वाद आज अभिशाप बनकर रह गया है। कितने दुर्भाग्य की बात है कि परमात्मा का दिया हुआ अनमोल उपहार यह नरतन आज हमारे लिए भार बन कर रह गया है। सच पूछा जाए तो आज हमारा जीवन सच्चे सुख-शान्ति, आन्तरिक प्रसन्नता व आनन्द से कट सा गया है। हम पूरी तरह भूल गये हैं कि नरता व पशुता में कुछ अन्तर है भी या नहीं? संसार की हर वस्तु, संसार का हर प्राणी कुछ नियमों, सिद्धान्तों का पूर्ववत् पालन कर रहा है। मनुष्य की बात करें तो सारे संसार का स्वामी एवं सब प्राणियों में श्रेष्ठ कहलाने वाले इस मानव के जीवन में खाने-पीने, रहने-सहने, बोलने-चालने, पहनने-ओढ़ने से लेकर सोने-जागने, कहने-सुनने और उठने-बैठने तक के लिए कोई नियम, सिद्धान्त व कुछ मर्यादाएँ हों, ऐसा दिखाई नहीं देता। संक्षेप में कहें तो जीवन को बनाये रखने वाली मर्यादाओं व शाश्वत जीवन मूल्यों को नष्ट-भ्रष्ट करके परमात्मा की स्वर्ग जैसी सुखद सृष्टि को नरक जैसी दु:खद बना डालने वाला मूढ़ मानव जीवन से निराश होने लगा है।

पूरी तरह अमर्यादित होकर उद्दण्डता के रास्ते चलते हुए जाने-अनजाने में अपने पैरों पर स्वयं ही कुल्हाड़ी मारकर रक्तरंजित हो चुके मानव की पतनगामी प्रवृत्तियों पर कलम चलाने की अपेक्षा उचित ये होगा कि अविद्यान्धकार में आपादमस्तक डूब चुके मानव की चेतना में प्रभु की अमर वेदवाणी का पावन प्रकाश प्रविष्ट कराया जाए। वेद में परमात्मा ने चार सौ वर्ष तक जीने की बात कही है। चालीस वर्ष में जीवन से हार चुके मानव के सामने चार सौ वर्ष तक जीने की कला रखी जाए तो निश्चित रूप से उसके अन्तर एक नई ऊर्जा, नई आशा व नये उत्साह का संचार होगा। जीवन जीने की इच्छा तो मानव का शाश्वत स्वभाव है, लेकिन जब वह जीवन भार बन जाए तो उसे ढोते-ढोते वह 50-60 वर्षों में थक ही जाता है। समस्या यह है कि मानव भार बन चुके जीवन को ढोते हुए 50-60 वर्षो में थक जाता है, ऐसे में वह थकावट को तो अनुभव कर लेता है लेकिन जीवन भार बना क्यों, इस पर कभी विचार नहीं करता। छान्दोग्य उपनिषद् के ऋषि इस दिशा में संकेत करते हुए लिखते हैं-'त इमे सत्या: कामा: अनृतापि-धाना:' (8.3.1) अर्थात् आत्मा की सत्य श्रेष्ठ व कल्याणकारी कामनाओं को सांसारिक झूठी कामनाएं ढक लेती हैं। अर्थात् आत्म-कल्याण की, आत्मा को सच्चा आनन्द देने वाली जो सत्य कामनाएं हैं, वे सांसारिक कामनाओं के नीचे दबी पड़ी रहती हैं। मनुष्य सांसारिक कामनाओं, इच्छाओं को पूरा करने में लगा रहता है। आज की भोगवादी प्रवृत्ति के ज्वार पर सवार मानव की सांसारिक इच्छाएं इतनी बढ़ गई हैं कि लाख हाथ-पैर मारकर भी वह इन्हें पूरी नहीं कर पाता, हां सांसारिक कामनाओं की पूर्ति के लिए भाग दौड़ करते-करते वह थक कर टूट जाता है, ऐसे में उसके लिए जीवन भार बनकर रह जाता है।

सच में जीवन भार नहीं है, जीवन तो हंसती-खेलती, उछलती-कूदती, किलोल करती हुई सरस सरिता की तरह है जो किसी से कुछ भी न चाहती-मांगती हुई सबको जीवन-यापन के संसाधन उपलब्ध कराना ही अपने जीवन का ध्येय मानती है। सच यह है कि जीवन का सुख देने में है, लेने में नहीं। जो लेने में सुख का अनुभव करते हैं, उनके लिए जीवन सच में भार बनकर रह जाता है। कौन नहीं जानता कि लेने वाले पर भार बढ़ता रहता है और देने वाला निरन्तर हल्का होता रहता है। जो लेने में सुख मान बैठे हैं, वे नहीं जानते कि वे प्रकृति के स्वभाव के प्रतिकूल आचरण कर रहे हैं। रामधारी सिंह दिनकर 'रश्मिरथी' में लिखते हैं-

दान प्रकृति का सहज धर्म है, मनुज व्यर्थ डरता है।
एक दिन तो उसको यहां सबकुछ देना ही पड़ता है।
किस पर करते उपकार वृक्ष यदि अपना फल देते हैं।
गिरने से पहले सम्भाला क्यों रोक नहीं लेते हैं?

अगली पंक्तियों में दिनकर दान देने की अनिवार्यता को समझते हैं-
ऋतु के बाद फलों का रूकना डाली का सड़ना है।
आये नव फल इसीलिए उनको तो गिर पड़ना है।।

सुधी पाठकों को यह जानकर अति आनन्द होगा कि हमारी वैदिक संस्कृति के उपासक हमारे पूर्वज एक सर्वमेध यज्ञ किया करते थे। इस सर्वमेध यज्ञ में अपना सब कुछ दान करके एक बार पूरी तरह रिक्त-हस्त हो जाते थे। कठोपनिषद् व कालिदास के साहित्य में ऐसे

यज्ञों का उल्लेख मिलता है। भला ऐसे उदार स्वभाव के परोपकारी सज्जनों के लिए जीवन भार कैसे हो सकता है? हमने अपनी देव-संस्कृति, देव-परम्परा को भुलाकार जीवन को स्वार्थ और संकीर्णता के अन्धकूप में धकेल कर सच में भार ही बना लिया है। हम भूल गये कि हम देवों की संतान हैं, देना हमारा स्वभाव हैं। श्रीराम जब वन को जा रहे थे, गुह उनके लिए भोजन लेकर आया और श्रीराम से भोजन ग्रहण करने की प्रार्थना करने लगा तो श्रीराम ने बड़े आत्मीय भाव से जो उत्तर दिया वह हम सब श्री राम भक्तों, देव-सन्तानों को अपने हृदय पटल पर स्वर्ण अक्षरों में अंकित कर लेना चाहिए। श्रीराम बोले-नहि अस्माभिः प्रतिग्राह्यं सखे देयं तु सर्वदा।

हे सखा! हे मित्र! हमने कभी किसी से कुछ लिया ही नहीं, मित्र, हमने सदा देना ही सीखा है। ऐसा कहकर श्रीराम ने भोजन ससम्मान लौटा दिया तथा केवल जल पीकर रात्रि-विश्राम किया। ऐसे देव पुरुषों का जीवन धन्य बन जाता है, भार नहीं। हमने अपने ऐसे महामानवों को जीवन का आदर्श न मान कर पूजा की वस्तु बनाकर मन्दिरों में रख दिया। हमारा दुर्भाग्य देखिये, रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि रामायण लिखने का उद्देश्य प्रकट करते हुए लिखते हैं-रामादिवत् प्रवर्तितव्यं न तु रावणादिवत्। अर्थात् मैंने यह रामायण इसलिए लिखी है कि आने वाली पीढ़ियां श्रीराम के जैसा आचार-व्यवहार करें, रावण जैसा नहीं। राम का जीवन जीने के लिए है पूजने के लिए नहीं। ऐसे देवपुरुषों महामानवों के मानवीय आदर्शो व जीवन-मूल्यों की अनदेखी करके ही हमने अपने जीवन को भार बना लिया है, इसीलिए न हमारा सौ वर्ष का जीवन ही रहा और न अधिक जीने की लालसा।

जीवन का आनन्द तो देने में है, देवता बनने में है। ऋग्वेद में आता है-व्रता देवानां मनुषच्क्ष धर्मभिः (3.60.6) अर्थात् देवों के व्रत, नियम व मर्यादाएं ही मनुष्यों के लिए धर्म हैं। हम देवों के व्रतों अर्थात् देने के स्वभाव को अपना धर्म न मानकर लेने में, स्वार्थ पूर्ति में ही सुख मानने लगें तो जीवन तो भार बनेगा ही। भार बन चुके जीवन को सौ वर्षो तक ढोना न तो मनुष्य को स्वीकार है न परमात्मा को। परमात्मा का स्पष्ट आदेश है। न देवानाम् अतिव्रत शतात्मा च न जीवति (ऋ 10.33.9) अर्थात् देवों के व्रत दानशीलता, यज्ञ व परोपकार आदि का अतिक्रमण (उल्लंघन) करके मनुष्य सौ वर्ष तक नहीं जी सकता। **'देवो दानाद् वा'** (निरू 7.15) के अनुसार देने वाले को ही देव कहते हैं। महर्षि याज्ञवल्क्य की स्पष्ट घोषणा है-**'यज्ञ एव देवानामात्मा'** (शत. 8.6.1.10) अर्थात् यज्ञ ही देवों का आत्मा है। जहां यज्ञ नहीं, वहां देवता रह ही नहीं सकते। इस प्रकार दानशीलता, उदारता, परोपकार की भावना को त्याग दिया जाए, मनुष्य केवल स्वार्थ पूरा करने, अपना हित, अपना लाभ व अपना सुख ही देखने लगे तो जीवन सच में भार बन जाता है। मनुष्य की आयु सौ वर्ष से घट कर कम हो जाती है। वर्तमान का हम सबका अनुभव इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। संसार के सब सुधी सज्जनों को संकीर्ण स्वार्थो से, केवल अपने सुखलाभ की भावना से, लेने में सुख मानने की प्रवृत्ति से ऊपर उठकर परोपकार की भावना, देने में सुख मानने की देव प्रवृति को अपने जीवन में स्वीकार ने व दूसरों को सिखाने-समझाने के लिए प्रयास अवश्य-अवश्य करने चाहिए। यही देवों का व्रत है, यही मनुष्यों का धर्म है। धर्म शब्द 'धृ धारणे' (भ्वादि 641) धातु से बनता है जिसका अर्थ ही धारण करना है। देवों का व्रत ही मनुष्यों के जीवन को धारण करने, बनाये रखने का मूल आधार है। स्वार्थ मरण है, परमार्थ जीवन है। लेने की प्रवृत्ति मरण है, देने का स्वभाव ही जीवन है। सुख देकर सुख पाना ही प्रकृति का शाश्वत सिद्धान्त है।

वैदिक संस्कृति के सभी सिद्धान्त मानवीय होने के साथ-साथ विज्ञानसम्मत भी हैं। यूरोप भारत के साथ एक कुटिल खेल-खेल रहा है। कोई विश्वास करे या न करे, सच यह है कि योरोप की सारी वैज्ञानिक उन्नति हमारे वैदिक साहित्य की देन है। तकनीकी ज्ञान-विज्ञान से लेकर मानवीय जीवन-मूल्यों-यज्ञ व परोपकार आदि भारतीय जीवन-दर्शन को लेकर योरोपीय वैज्ञानिक जगत् सदियों से काम करता व लाभ उठाता है। तकनीक व चिकित्सा के बारे में चर्चा करना विषयान्तर होगा, यज्ञ सम्बन्धी वैज्ञानिक परीक्षण व उसके असंख्य लाभों पर चर्चा करना भी प्रसंग से हटकर होगा। हां दैवीय जीवन, देने में सुख को लेकर योरोप में जो परीक्षण वहां के समाजशास्त्री कर रहे हैं, साथ में जो चिकित्सकीय अनुसन्धान के निष्कर्ष निकल रहे हैं, वे वैदिक संस्कृति के जीवन मूल्यों की शाश्वत सच्चाई को प्रमाणित कर रहे हैं। कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक शोध में पाया कि निःस्वार्थभाव से दूसरों की सहायता व सेवा करने से हमारे मस्तिष्क का 'वैंट्रल स्टेटम' नामक भाग सक्रिय हो जाता है, जिससे डोयामाइन नामक रसायन निकलता है। यह रसायन मस्तिष्क को सन्तुलित रखने व खुशी अनुभव कराने का काम करता हैं शोधकर्त्ताओं ने यह भी पाया कि अपने निकट रहने वाले लोगों की सहायता व सेवा करने से आयु बढ़ती है तथा यह गुण जीन्स के द्वारा हमारे वंशजों को भी मिलता है। जीवविज्ञानी डॉ. मार्निया रॉबिन्सन की पुस्तक-क्यूपिड्स-माइजण्ड एरो' के अनुसार अपनी खुशी के लिए जब हम काम करते हैं तो एक ऐसा हार्मोन निकलता है जो और अधिक पाने की तीव्र इच्छा तो पैदा करता है लेकिन सन्तुष्टि नहीं देता। यह एक इच्छा पूरी होने पर दूसरी इच्छा पैदा करता है। ब्रिटिश कोलम्बिया विश्वविद्यालय और हार्वर्ड बिजनेस स्कूल के शोधकर्ताओं ने कनाडा, दक्षिण अफ्रीका व भारत आदि देशों में अध्ययन किया तथा 136 देशों के आंकड़े देख कर निष्कर्ष निकाला कि अपनी आवश्यकताएं भी पूरी न पाने वाले लोग जब दूसरों की आवश्यकताएं पूरी करने के लिए धन खर्च करते हैं तो उन्हें अधिक सुख प्राप्त होता है। शोध कर्ताओं का स्पष्ट कहना है कि दूसरों को सुख देने में आनन्द की अनुभूति होना पूरी मानव जाति का मनोवैज्ञानिक गुण है।

दान की प्रवृत्ति और दूसरों को सुख देने से जुड़ा हुआ एक रोचक व प्रेरक प्रसंग अमेरिका के प्रसिद्ध उद्योगपति एवं दानवीर जॉन रॉक फेलर के जीवन से जुड़ा हुआ है। रॉक फेलर ने कहा था- 'मैंने इतना पैसा इसलिए कमाया, क्योंकि मुझमें लोगों की सहायता करने की भावना है। मैंने लोगों को दिया इसलिए मुझे मिला। यदि मैं सही ढंग से पैसा दान करना बन्द कर दूँ तो ईश्वर मुझसे पैसा वापिस ले ले।' प्रसिद्ध अर्थशास्त्री जॉन सी. ब्रुक्स ने जब रॉक फेलर का यह कथन पढ़ा तो उसे बड़ा विचित्र लगा कि पैसा बाँटककर कोई पैसा कैसे कमा सकता है। इसी अन्तराल में हार्वर्ड विश्वविद्यालय के शोधकर्त्ताओं ने अमेरिका के 41 समुदाय के 30000 लोगों के सेवाभाव और दान देने के प्रवृत्ति का अध्ययन करने का निर्णय लिया। अध्ययन का परिणाम यह आया कि जिनमें दान देने की प्रवृत्ति अधिक थी, वे अधिक धनवान् पाये गये। जॉन सी. ब्रुक्स ने रॉक फेलर के कथन और

(शेष पृष्ठ 18 पर)

राम भक्त कौन

❐ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

पंचकूला स्थित कार्यालय में बैठा कुछ आव यक कार्य कर रहा था कि अचानक पहुंचे अधीक्षक महोदय ने रामनवमी के एक कार्यक्रम का निमन्त्रण पत्र देते हुए अनुरोध किया कि चण्डीगढ़ इस कार्यक्रम में परिवार सहित पहुंचे। निमन्त्रण पत्र लेकर मैंने उन्हें अपनी विवशता बताई कि रामनवमी के दिन मैं पहले ही किसी अन्य कार्यक्रम में बतौर वक्ता स्वीकृति दे चुका हूं। यह सुनकर कुछ मायूस होकर अधीक्षक महोदय ने ताना कसा ''आप आर्य समाजी तो राम को मानते नहीं शायद इसीलिए बहाना बना रहे हैं।'' उनकी बात सुनकर मैं चौंका और सोचने लगा लोगों में विशेषकर पौराणिक जगत में यह कैसी भ्रान्ति है कि आर्य समाज राम को नहीं मानता। इसका निराकरण करना मुझे आवश्यक लगा। मैंने आग्रहपूर्वक अधीक्षक महोदय को बैठा लिया और आर्य केन्द्रीय सभा चंडीगढ़ के सहयोग से आर्य समाज सैक्टर 19 में आयोजित होने वाले रामनवमी के कार्यक्रम का निमन्त्रण पत्र निकाल कर दिया और बोला ''देखिये श्रीमान मैं कोई बहाना नहीं बना रहा मैं इस कार्यक्रम के लिए पहले स्वीकृति दे चुका हूं और शायद इससे आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि आर्य समाज मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की शिक्षाओं को मानता है। फिर भी आपके मन में जो भी भ्रान्ति हो आप नि:संकोच पूछ सकते हैं उनका निराकरण करने का प्रयास करूंगा।''

हमारे बीच हुई उस चर्चा को ही मैंने रामनवमी के दिन आर्य समाज सैक्टर-19 चण्डीगढ़ में रखा जिसे मैं इस लेख में भी उसका उल्लेख कर रहा हूं।

उन्होंने पहला प्रसन्न दागा ''परन्तु विवेक जी आर्य समाज में हमने कभी राम की मूर्ति तो देखी नहीं फिर आप राम को कैसे मानते हैं?'' मैंने समझाया समाज का पतन यहीं से प्रारम्भ हुआ जब हम चरित्र को छोड़कर चित्र की पूजा करने लगे। हम स्वयं चेतन होकर भी जड़ के आगे नतमस्तक होकर माथा टेकने लगें हमने रामचरित्र ना पढ़ा ना समझा फिर उन आदर्शों को जीवन में कैसे धारण करते जिनके कारण श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए। मैंने समझाते हुए कहा-

कलयुग के इंसान की, उल्टी देखी चाल।
जड़ के आगे चेतना, क्यों झुकावे भाल॥

इस बात को सुनकर सज्जन थोड़ा चौंके पर जड़ मूर्ति पूजा पर सीधे प्रहार से तिलमिला गए और बोले ''हम राम की पूजा करते हैं, राम नाम की माला जपते हैं और राम की मूर्ति में ही राम का चरित्र देखते हैं।'' मैंने उन्हें थोड़ा सा संयम करके पूछा ''राम की पूजा से आपका तात्पर्य क्या हैं?'' ''हम भोग लगाते हैं, आरती करते हैं, सीताराम जपते हैं।'' उनका उत्तर था। अब मैंने समझाने का प्रयास किया पूजा का अर्थ है यथायोग्य सत्कार आपने मूर्ति बनाकर उसको भोग लगाकर प्रसाद खिलाने का प्रयास किया क्या कभी उस प्रतिमा ने आपका वह प्रसाद स्वीकार किया या पूजा के नाम पर आया प्रसाद पुजारी पचा गया या वह घूम कर वापिस बार-बार बिका। यह समझाते हुए बतलाया कि

पत्थर पूजक तो यहां, पत्थर दिल हैं खूब।
बच्चे बिलखें भूख से, पत्थर पी गए दूध॥

आपने नाम को बार-बार जपा क्या उससे राम के चरित्र का कोई ज्ञान हुआ, क्या केवल नाम जपते रहने से मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के जीवन चरित्र को जान मान कर हम अपने जीवन में धारण कर पाए।

अचानक टोकते हुए वह बोले ''अच्छा बताओ आर्य समाज कैसे राम की भक्ति करता है?'' मैंने समझाने का प्रयास किया ''राम की सच्ची भक्ति तो आर्य समाज ही करता है। हम श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम मानते हैं और वह जीवन भर जिन मर्यादाओं पर चलते रहे उनको जान मान कर हम अपने जीवन में धारण करने का प्रयास करें। देखिए हमारे और आपके श्रीराम की भक्ति का एक मूल अन्तर है। आप कहते हैं सीता-राम, सीताराम, सीताराम कहिये, जिस विधि राखे राम ता विधि रहिये। पर आर्य समाज मानता है सीताराम, सीताराम, सीताराम कहिये, जिस विधि रहते राम ता विधि रहिये। हम जिस विधि राखे राम कह कर स्वयं को अकर्मा बना लेते हैं और वेद में 'अकर्मा दस्यु'' कहकर कर्महीनता की भर्त्सना की गई है। अपितु यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के दूसरे मन्त्र में कुर्वन्नेह वा कर्माणि... कहकर सौ वर्षो तक कर्म करते हुए जीने की इच्छा करने का आदेश है। अब हम जीवन में कार्य कैसे करें तो इसकी प्रेरणा हम मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के जीवन से भी ले सकते हैं।

मेरी बात सुनकर कुछ खीजकर वह बोले यदि आप इतना ही राम को मानते हैं तो उन्हें ईश्वर क्यों नहीं मानते और उनके मन्दिर क्यों नहीं बनाते। उनकी बात सुनकर मैं हंसा ''देखिए महाशय ईश्वर का सच्चा स्वरूप तो महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के दूसरे नियम में दे दिया है जो कि ईश्वर सच्चिदानन्द, निराकार, सर्व शक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सुष्टिकर्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम भी ईश्वर के इसी स्वरूप को मानते थे और यज्ञ किया करते थे। अब बताओ जिस ईश्वर की पूजा राम स्वयं किया करते थे। हम भी उनकी पूजा करें या फिर उनके सिद्धांतों के विपरीत उस ईश्वर के भक्तों की पूजा प्रारम्भ कर दें। हम श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम आर्य वैदिक धर्म पालक मानते हैं। जिन आर्य सिद्धान्तों का श्रीराम ने जीवन भर पालन किया हमारा भी कर्तव्य बनता है कि उन मर्यादाओं, सिद्धांतों, शिक्षाओं को हम भी जाने और मानें यदि सही मायनों में हम उनकी भक्ति करते हैं। जहां तक राम मन्दिर का प्रसन्न है तो अयोध्या किसी स्थान विषेश का ही नाम नहीं अपितु अष्ट चक्रा नव द्वारा मम शरीर पुर अयोध्या अर्थात् आठ चक्रों नौ द्वारों वाला हमारा यह मनुष्य शरीर ही अयोध्या नगरी है और हम राम चरित्र को जान मान कर उन सिद्धांतों शिक्षाओं, मर्यादाओं का पालन करते हुए अपने मन मंदिर में उन्हें स्थापित करके अपने अंदर ही भव्य राम मन्दिर का निर्माण कर सकते हैं। मेरी बात सुनकर अधीक्षक महोदय अब संतुष्ट हो चुके थे और बोले ''चलिये इस बार मैं भी आर्य समाज के रामनवमी के कार्यक्रम में चलूंगा।''

- 602, जी.एच., 53, सैक्टर-20, पंचकूला

आत्मविश्वास

❐ श्री रामचरण यादव

अजीब बात है, अधियारी अमावस्या की रात ही दीपावली होती है। जगमग करते बल्वों के प्रकाश में नहाया हुआ सारा शहर। अमीरों की गगनचुम्बी अट्टालिकाएं रंग-बिरंगी झालरों की आभा में डूबी हुई। चारों ओर चहल-पहल हर तरफ खुशियों का साम्राज्य। प्रकाश का सागर मानों सारे नगर को सजाये हुए था। मध्यमवर्ग के गृह-स्वामियों ने भी अपनी सामर्थ्य एवं शक्ति के अनुरूप अपने घरों को झालरों से सजाया था, वहीं दूसरी तरफ दूर झोपड़ियों में दीपों की पंक्तियों दिखाई पड़ रही थीं। टिमटिमाते दीपक मानो अपने क्षीणकाय अस्तित्व को बचाने का असफल प्रयास कर रहे थे। हवा के झौके उनको पल-पल में कम्पित कर रहे थे। दीपों का क्षीण प्रकाश मानो दीन-हीन दृष्टि से उन ऊंची हवेलियों की साज-सज्जा को देख रहा हो। दूर जगमगाती बल्वों की झालर ने दीपक को टोका-अरे मित्र दीपक इतने उदास क्यों हो? क्यों बार-बार सूखे पत्ते से कांप रहे हो।

दीपक ने बुझे स्वर में अपना शीश हिलाया और कहा क्या बताऊं बहन झालर-बिजली और बल्व तुम्हारा प्रकाश है, तुम्हारा वैभव है तुम्हारा सौन्दर्य भी असीम है। काश मैं भी इतना प्रकाश पा सकता। मैं भी इन्द्रधनुषी रंगों से सराबोर हो सकता। बल्वों की झालर ने गर्व से शीश हिलाया मानो विश्व का समस्त सुख उन्हीं के पास हो। वहीं आसपास चोरी छुपे अंधकार दोनों के संवाद सुन रहा था। झिलमिलाते कांपते दीपों को देख बोला-वत्स, जो कुछ तुम देख रहे हो वह सत्य नहीं है। यह प्रकाश, ये रूप, ये रंग सब बाह्य आवरण है, दिखावा है, आडम्बर है।

'तो सत्य क्या है मेरे भाई? क्या बाह्य सौन्दर्य का कोई मूल्य नहीं, क्या वैभव का कोई रूप नहीं? दीपक के क्षीण स्वर सुनायी दिये। 'नहीं दीप नहीं। वास्तविक सौन्दर्य तो आत्मा का है। आत्मविश्वास जिसके पास है वही सच्चे सौन्दर्य से परिपूर्ण होता है। आत्मबल ही सब कुछ है जो तुम में भरपूर है। बल्वों का प्रकाश स्वयं का नहीं वरन् विद्युत द्वारा अर्जित है। तुम तो स्वयं सामर्थ्यवान् हो। तुम पल-भर में ही मेरे हृदय को भी आलोकित कर सकते हो। तुम्हारा प्रकाश अक्षुण्ण है, अनश्वर है। तभी अचानक विद्युत प्रवाह रूक गया तथा सभी अ्टालिकाएं अंधेरे में डूब गयीं। अंधकार की सारी बातें अब दीपक की समझ में आ गई। दीप अब समझ गया था कि आत्मा का प्रकाश एवं आत्मविश्वास ही सब कुछ है। वह अनवरत जलते हुए भी मन्द-मन्द मुस्करा कर अपने हर्ष को प्रकट कर रहा था। बड़ी-बड़ी हवेलियों पर छाया अंधकार दीपक के भाग्य की सराहना में लीन था। सचमुच आत्मा का सौन्दर्य ही जीवन हैं आत्मविश्वास ही जीवन का आधार है, सफलता की सीढ़ी है।

– प्रधान सम्पादक-नाजनीन, सदर बाजार, बैतूल (मध्य प्रदेश)

टंकारा ऋषि बोधोत्सव 2018 के चित्रों को देखने और डाऊनलोड करने के लिए इंटरनेट के माध्यम से https://www.facebook.com/AjayTankarawala/ पर जायें और लाइक व शेयर अवश्य करें।

आप ऋषि जन्मभूमि हेतू दानराशि निम्नलिखित रूप से भेज सकते हैं

दानराशि नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा ''**श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**'' के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवा सकते हैं अथवा खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC CODE PUNB0466500 में जमा करा सकते हैं। बैंक में जमा की गई दानराशि/तिथि/पते की सूचना एवम् रसीद किस नाम से बनानी हैं मो. 09560688950 पर लिखित सूचना मैसेज/वट्सअप द्वारा देवें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

टंकारा समाचार

पाठकों से विनम्र निवेदन

आपका प्रिय टंकारा समाचार निरन्तर 21 वर्षो से प्रति माह प्रकाशित हो रहा है। हमारा यह प्रयास रहा है कि वेद प्रचार, वैदिक मान्यताओं, महर्षि दयानन्द सरस्वती का दर्शन आप तक सरलतम भाषा में पहुँचे। आप द्वारा दिये गये सहयोग से इसकी ख्याति दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। आप इसके मान्य आजीवन सदस्य है।

आप सभी आजीवन सदस्यों से अनुरोध है कि 200/- रूपये की राशि टंकारा समाचार के नाम चैक द्वारा या टंकारा समाचार के **खाता नम्बर 0130010101110898, बैंक पी.एन.बी. मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC Code-PUNB0466500** में सीधे जमा करके अथवा NEFT करवा कर टंकारा समाचार कार्यालय, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर सूचित करें अथवा मोबाइल नम्बर 09560688950 पर एस.एम.एस. या कॉल कर (अपना आजीवन सदस्यता नम्बर नाम पते सहित भेजें।) ताकि टंकारा समाचार आपको प्राप्त होता रहे। **(क्योंकि आजीवन सदस्य की राशि बढ़ा दी गई है।)**

-प्रबन्धक

વેદમાં આધુનિક વિજ્ઞાન

મૂળ હિન્દીમાં લેખકઃ- ડૉ. વિક્રમ કુમાર 'વિવેકી' 'પરોપકારી પત્રિકાના ડીસેમ્બર ૨૦૧૭ - પ્રથમમાંથી સાભાર'
અનુવાદકઃ- રામમહેતા

આજે સમાચારો અને ભાષણોનું આખીય દુનિયામાં જીવંત પ્રસારણ, વિવિધ રમત-ગમતોનું જીવંત પ્રસારણ મેદાનો કરતા પણ વધારે સુવિધાજનક અને સટીક રીતે જોઈ શકીએ છીએ. વિવિધ યુદ્ધો, વર્ગોમાં અપાતા પ્રવચનો, પૃથિવી, ગ્રહ-નક્ષત્રો, અનન્ત આકાશ અને સમુદ્રના તળીયે ઘટતી ઘટનાઓનું યથાર્થ દર્શન, શ્રવણ આપણા બેડરૂમમાં બેઠા બેઠા જ કરી લઈએ છીએ. આ કઈ રીતે શકય? આ એક યક્ષ પ્રશ્ન છે. પરંતુ એનો ઉત્તર વૈજ્ઞાનિક છે અને આ ઉત્તર ઋગ્વેદના પ્રથમ મંત્રમાં છે. પાઠકો વાંચીને ચોંકી ગયા હશે.

વેદ શબ્દનો અર્થ છે 'જ્ઞાન'. ઋગ્વેદના પ્રથમ મંત્રમાં જ ઉપર્યુકત વિજ્ઞાનની સૂક્ષ્મ ચર્ચા છે. મન્ત્ર છે - **'અગ્નિમીળે પુરોહિતં યજ્ઞસ્ય દેવમૃત્વિજમ્। હોતારં રત્નધાતમમ્॥'** આ મન્ત્રમાં નાનકડું વાકય છે - 'અગ્નિમ્ ઈડે', અર્થ છે – હું અગ્નિની સ્તુતિ કરું છું.. બાકીના પાંચ શબ્દો અગ્નિના પાંચ વિશેષણ છે.

અગ્નિ શું છે, કેવો છે, કયો છે, કયાં છે, એનું સ્વરૂપ અને સ્વભાવ કેવા છે? આદિ અનેક પ્રશ્નોનું સમાધાન મન્ત્રના વિશેષણોમાં તથા પછીના બીજા આઠ મંત્રોમાં અનેક સ્થળે આપ્યું છે. વૈદિક વાંગ્મયમાં અગ્નિના મુખ્ય ત્રણ સ્વરૂપ કહેવામાં આવ્યા છે. – ૧ સૂર્યાગ્નિ, ૨ વિદ્યુદગ્નિ, અને ૩ પાર્થિવાગ્નિ. અગ્નિ શબ્દના ઘણા બધા અર્થ થાય છે જે સ્વામી દયાનન્દ સરસ્વતી કૃત વેદભાષ્યમાં જોઈ શકાય છે. જેમ કે – ઈશ્વર, અધ્યાપક, નાયક આદિ, પરન્તુ અહિં વિજ્ઞાનના ક્ષેત્રમાં માત્ર અગ્નિ અર્થનો જ સંબંધ છે. ઉપર્યુકત ત્રણે અગ્નિ ભૌતિક અગ્નિ જ છે. પંચ મહાભૂતોમાં જે અગ્નિ નામક ભૂત-તત્ત્વ છે એના જ આ ત્રણ સ્વરૂપ છે. આકાશ, વાયુ, અગ્નિ, જળ અને પૃથિવી નામના પંચ મહાભૂતોથી તો પાઠકગણ સુપરિચિત છે. પાર્થિવાગ્નિ તો એ છે જે રસોઈઘર આદિમાં પ્રજ્વલિત થઈને આપણી સેવા કરે છે. સૂર્યાગ્નિ વિના સૃષ્ટિની પરિકલ્પના થઈ ન સકે. વિદ્યુદગ્નિ આ બધામાં અદ્ભૂત છે જે ઉપર્યુકત સમગ્ર વિજ્ઞાનનું આધાર-તત્ત્વ છે.

કૉમ્પ્યૂટર કે મોબાઈલ આદિમાં બે મુખ્ય તત્ત્વ છે હાર્ડવેર અને સૉફ્ટવેર. હાર્ડવેર સ્થૂળ હોય છે જે દેખાય છે, સૉફ્ટવેર અદૃશ્ય હોય છે. વિદ્યુતઅગ્નિ કરંટના રૂપમાં અદૃશ્ય જ હોય છે. આજ મુખ્ય સૉફ્ટવેર છે, જેના વિના કોઈ પણ વિજ્ઞાનનો આવિર્ભાવ અસંભવ છે. વિદ્યુતની ગતિ વિસ્મયજનક છે. એના જ કારણે મોબાઈલ, કૉમ્પ્યુટર આદિ સક્રિય થઈને વાસ્તવિક પરિણામ આપી શકે છે. વિદ્યુત ન હોય તો આ બધા પાર્થિવ નિષ્ક્રિય તત્ત્વ જ હોય છે. એક જ ઘરમાં બેઠેલા બે જણ મોબાઈલમાં પરસ્પર વાતો કરે છે ત્યારે એમનું પરસ્પરનું અંતર તો એક રૂમથી બીજા રૂમ વચ્ચેનું જ હોય છે, પરંતુ કેટલું મોટું વૈજ્ઞાનિક સત્ય છે કે એમના વાર્તાલાપનો ધ્વનિ હજારો કિલોમિટર દૂર સ્થાપિત ઉપગ્રહના માધ્યમથી હજારો કિલોમિટરની તેજ ગતિથી વિદ્યુતઅગ્નિ (સ્પેકટ્રમ)ના માધ્યમથી એક – બીજા સુધી સ્પષ્ટ રૂપે પહોંચી રહી હોય છે. વિદ્યુત ન હોય તો આ બધું નિરર્થક છે.

ઈસરોએ ૨૦૧૭ના ફેબ્રુઆરીમાં એક સાથે ૧૦૪ ઉપગ્રહ તરતા મૂકવાનો રેકૉર્ડ બનાવ્યા. એમાં ભારતનો જે ઉપગ્રહ છે એ સરહદ અને પાડોશી દેશો પર નજર રાખે છે. આ ઉપગ્રહ ૫૦૦ કિલોમિટરની ઊંચાઈ ઉપરથી પડોશી દેશોની યુદ્ધ ટેન્કોની ગણત્રી પણ કરી શકે છે. સર્જિકલ સ્ટ્રાઈકનું પ્રસારણ કંટ્રોલરૂમ સુધી આ ઉપગ્રહ દ્વારા જ પહોંચતું હતું. આ ઉપગ્રહોનું કામ પુરુ થયા પછી પણ પોતાની કક્ષામાં ૩૦ હજાર કિલોમીટર પ્રતિ સૈકન્ડની ગતિથી ફર્યા કરશે. પાઠકગણ જરા વિદ્યુત ગતિની કલ્પના તો કરી જુઓ. સ્પષ્ટ છે કે ઉપગ્રહોનું પ્રક્ષેપણ કરવું, એને વાંછિત ઊંચાઈ પર કક્ષામાં સ્થાપિત કરવા, નિયંત્રિત કરવા, એમની પાસેથી મળેલ મહત્ત્વપૂર્ણ જાણકારીનો યોગ્ય ઉપયોગ કરવો એક જટિલ ટેકનોલૉજીનું પરિણામ છે. એવા રડાર બનાવવામાં આવ્યા છે કે જે ૩૦ સેન્ટીમિટર જેટલી નાનકડી વસ્તુને હજારો કિલોમિટર દૂરથી જ શોધી કાઢે છે. દૂરસંવેદી ઉપગ્રહોની મદદથી ધરતીની અંદર છુપાયેલા ખનિજ ભંડારોને પણ શોધી શકાય છે. આ બધું કઈ રીતે શકય બન્યું છે? સૂર્ય, પૃથિવી અને બીજા ગ્રહ – નક્ષત્રોના આકાર અને પરસ્પરની દૂરીની ચોકસ જાણકારી કઈ રીતે મળી શકે? વિમાનોની ગતિ, ગતિ પર નિયંત્રણ, શારીરિક અને બાહ્ય સમસ્ત યંત્રોનું સંચાલન, સમગ્ર બ્રહ્માંડની સમસ્ત ગતિવિધિઓ – આ બધું આજ અગ્નિ વિદ્યા પર જ આધારિત છે. એટલે જ ઋગ્વેદના મન્ત્રમાં પહેલું વિશેષણ કહ્યું છે 'પુરોહિતમ્' અર્થાત્ જે અગ્નિના રૂપમાં, આકર્ષણ શકિતના રૂપમાં વિદ્યમાન છે. 'પુરોહિત' શબ્દનો અર્થ માત્ર મન્દિરના પૂજારી કે પંડિત ન હોઈ શકે. પંડિતને પણ પૂજારી એટલા માટે કહે છે કે એને આપણા આગેવાન (અગ્રણી) માનવામાં આવે છે.

અગ્નિ અગ્રણી છે. નિરુકતકાર યાસ્કે પણ લખ્યું છે – "અગ્નિરગ્રણિર્ભવતિ, પુરઃ એનં દધતિ" અર્થાત્ અગ્નિ અગ્રણી એટલા માટે છે કે એ સહુથી આગળ હોય છે. 'પુરોહિત' એટલે કહેવાય છે કે એ સહુને આગળ રાખે છે, વિજ્ઞાન આ અગ્નિ તત્ત્વ વિના પાંગળુ છે. વિચાર કરો જરા અગ્નિ વના જીવન કેટલું દુર્ભર બની જાય.

આ અગ્નિ 'યજ્ઞસ્ય દેવમ્' પણ છે. યજ્ઞના દેવતા છે. યજ્ઞનું તાત્પર્ય માત્ર યજ્ઞકુંડના અગ્નિના અર્થમાં જ નથી. 'યજ્ઞો વૈ શ્રેષ્ઠતમં કર્મ' મુજબ પ્રત્યેક શ્રેષ્ઠ કર્મ યજ્ઞ છે અને આ અગ્નિ એ સમસ્ત શ્રેષ્ઠકર્મોના દેવ છે. 'દેવો દાનાદ્ વા દીપનાદ્ વા દ્યુસ્થાનો ભવતીતિ વા' (નિરુકત) ઘણું બધું આપનાર, પ્રકાશિત હોવાથી, અને દ્યુલોકમાં પણ એની સત્તા હોવાને કારણે અગ્નિ 'દેવ' કહેવાય છે. આ અગ્નિ ઋત્વિક પણ છે અર્થાત્

ઋતુઓની નિર્માતા પણ છે. એને 'હોતા' પણ કહી છે કારણ કે એ શિલ્પક્રિયાઓથી ઉત્પન્ન કરવા યોગ્ય પદાર્થોની દાતા છે. એને 'રત્નધાતમમ્' પણ કહે છે કારણ કે એ સારા સારા સુવર્ણ આદિ રત્નોના ધારક તત્ત્વ છે. સુવર્ણ અગ્નિનું જ રૂપાન્તરણ છે. અહીં એ કહેવું છે કે ઋગ્વેદના પ્રથમ મન્ત્ર અને પછીના અન્ય મન્ત્રો પર સ્વામી દયાનન્દે કરેલ ભાષ્યનો પાઠકો સ્વાધ્યાય કરે, એના પર ઉંડું ચિંતન મનન કરે. સ્વામીજી લખે છે – "યાસ્કમુનિએ સ્થૌલાષ્ઠીવિ ઋષિના મત પ્રમાણે 'અગ્નિ' શબ્દનો 'અગ્રણી' અર્થાત્ સહુથી ઉત્તમ અર્થ કર્યો છે અર્થાત બધા યજ્ઞોમાં જેનું સહું પહેલા પ્રતિપાદન થાય છે એ સહુથી ઉત્તમ જ હોય છે". એટલે અગ્નિ શબ્દનો ઈશ્વર તથા દાહગુણ વાળી 'ભૌતિક અગ્નિ' આ બંને અર્થોનું ગ્રહણ થાય છે."

ભૌતિક અર્થનો સ્વીકાર કરવાના પ્રમાણ જોઈએ – (યદશ્વ) ઇત્યાદિ શતપથ બ્રાહ્મણના પ્રમાણોથી અગ્નિ શબ્દનો અર્થ ભૌતક અગ્નિ બને છે. આ અગ્નિ બળદની જેમ બધા દેશ-દેશાન્તરોમાં પહોંચાડવા વાળો હોવાથી 'વૃષ' અને 'અશ્વ' પણ કહેવાય છે, કારણ કે એ કળાઓ દ્વારા 'અશ્વ' અર્થાત ઝડપથી ચાલવાવાળો હોવાથી શિલ્પવિદ્યાના જાણકારો વિમાન આદિ વાહનોને તીવ્ર ગતિથી દૂર દૂરના દેશોમાં પહોંચાડે છે. (અગ્નિમીળે) પરમાર્થ અને વ્યવહાર વિદ્યાની સિદ્ધિ માટે અગ્નિ શબ્દનો અર્થ પરમેશ્વર અને ભૌતિક અગ્નિ એ બંને થઈ શકે છે. પહેલાના સમયમાં આર્યજનોએ અશ્વવિદ્યા નામની ઝડપથી આવાગમન કરવા માટે શિલ્પવિદ્યાની શોધ કરી હતી એ 'અગ્નિવિદ્યા'ની જ ઉન્નતિ હતી. જાતે જ પ્રકાશમાન, બધાના પ્રકાશક અને અનન્ત જ્ઞાનવાન આદિ ગુણોને લઈને અગ્નિ શબ્દના પરમેશ્વર તથા રૂપ, દાહ, પ્રકાશ, વેગ, છેદન આદિ ગુણ અને શિલ્પવિદ્યાના મુખ્ય સાધક આદિના કારણે પ્રથમ મન્ત્રમાં ભૌતિક અર્થને ગ્રહણ કર્યો છે.

પછીના મન્ત્રમાં 'અગ્નિ' શબ્દને લઈને સ્વામીજીએ અધ્યાપક, વિદ્યાર્થી અને વૈજ્ઞાનિકોને પરામર્શ આપ્યો છે – એ (અગ્નિ) પરમેશ્વર (ઈડ્ય:) સ્તુતિ કરવા યોગ્ય અને આ ભૌતિક અગ્નિ સદાય સંશોધન કરવા યોગ્ય છે.

દાવા સાથે કહું છું કે જે સોફ્ટવેરની ટેકનોલૉજીથી દરરોજ નવી નવી શોધો સામે આવી રહી છે, બે–ચાર મહીનામાં નવી ટેકનોલૉજીને કારણે મોબાઈલ જુના પડી જાય છે, નવી ટેકનોલૉજીથી સજ્જિત નવા મોબાઈલ ઝડપથી સામે આવી રહ્યા છે, આ બધું અગ્નિ શબ્દની પ્રેક્ટિકલ વ્યાખ્યા જ છે. સાયંસને ઋગ્વેદના પ્રથમ મન્ત્રની કોમેન્ટ્રી માનવી પડે છે અને આ વૈજ્ઞાનિકોને પણ ઋષિ –કલ્પ માનવા પડે છે, ઋષિપુત્ર કહેવા પડે છે."

"અને જે સર્વજ્ઞ પરમેશ્વરે ત્રિકાલસ્થ ઋષિઓને મન્ત્રમાં પરમાર્થ અને વ્યવહારની બે વિદ્યા કહી છે, એનાથી એમાં ભૂત કે ભવિષ્યકાળની વાત કહેવામાં કોઈ પણ દોષ નથી થતો, કારણકે વેદ સર્વજ્ઞ પરમેશ્વરના વચન છે. એ પરમેશ્વર ઉત્તમ ગુણોને તથા ભૌતિક અગ્નિ વ્યવહાર કાર્યોમાં પણ સંયુક્ત કરેલા ઉત્તમોત્તમ ભોગના પદાર્થોને આપવા વાળા છે. જુનાની તુલનામાં એક પદાર્થ કરતા બીજો નવો અને નવાની તુલનામાં પહેલો જુનો હોય છે.

આજ અર્થ આ મન્ત્રના નિરુક્તકારે પણ કર્યો છે કે અજ્ઞાની લોકોએ પ્રસિદ્ધ ભૌતિક અગ્નિનો ઉપયોગ રસોઈ બનાવવા આદિ કાર્યોમાં કર્યો છે, એ અર્થ આ મન્ત્રમાં નથી કરવાનો, પરંતુ બધાને પ્રકાશના આપવાવાળા પરમેશ્વર અને બધી વિદ્યાઓનું કારણ જેનું નામ વિદ્યુત છે, એજ ભૌતિક અગ્નિ શબ્દનો કર્યો છે."

વેદમાં 'અશ્વિનૌ' શબ્દની ચર્ચા પણ અનેકાનેક સ્થળે જોવા મળે છે. મહર્ષિ દયાનન્દ સરસ્વતી 'અશ્વિનૌ' શબ્દની અદ્ભૂત વ્યાખ્યા કરે છે. નિરુક્ત આદિના પ્રમાણોથી તથા 'યોગજ-બુદ્ધિ'થી વિજ્ઞાન સાથે સમ્બન્ધિત અનેક રહસ્યોને ખોલે છે. ઋગ્વેદાદિભાષ્ય ભૂમિકાના 'નૌકાવિમાનાદિ વિષય' પ્રકરણમાં તેઓ લખે છે –"વાયુ અને અગ્નિ આદિના નામ 'અશ્વિ' છે કારણકે બધા પદાર્થોમાં 'ધનંજય'ના રૂપમાં વાયુ અને 'વિદ્યુત'ના રૂપમાં અગ્નિ – બંને વ્યાપ્ત છે તથા જળ અને અગ્નિના નામ પણ 'અશ્વિ' છે કારણ કે અગ્નિ જ્યોતિથી યુક્ત અને જળ રસથી યુક્ત થઈને વ્યાપ્ત થઈ રહ્યા છે. 'અશ્વૈ' અર્થાત એ વેગાદિ ગુણોથી યુક્ત છે. જે પુરુષોને વિમાનાદિની યાત્રાની ઇચ્છા હોય , તેઓ વાયુ, અગ્નિ અને જળથી એને સિદ્ધ કરે".

અશ્વિ અર્થાત અગ્નિ અને જળ છે, એના સંયોગથી વરાળરૂપી અશ્વ અત્યન્ત ગતિ આપવાવાળા હોય છે. એને જેટલી વધારવી હોય એટલી વધારી શકાય છે. જે વાહનોમાં બેસીને સમુદ્ર અને અન્તરિક્ષમાં નિરન્તર સ્વસ્તિ અર્થાત સદાય સુખ આપે છે કે જે વાયુ, અગ્નિ અને જળ આદથી ગતિ મળે છે, એને મનુષ્યો સુવિચાર પૂર્વક ગ્રહણ કરે. આ સામર્થ્ય પૂર્વોક્ત અશ્વિસંયુક્ત પદાર્થોમાં જ છે. બધા કારીગર લોકોએ આવા વાહનો બનાવવાની કળા જાણવી જોઈએ. જે વાહનો દ્વારા ત્રણ દિવસ અને ત્રણ રાતમાં દ્વીપ – દ્વીપાન્તરમાં જઈ શકાય. હે મનુષ્યો! (મનોજુવ:) અર્થાત જેવી રીતે મનની ગતિ છે, એવી રીતે ગતિમાન વાહનો બનાવો. એ વાહનોમાં (મરુત્) અર્થાત વાયુ અને અગ્નિને મનોવેગની જેમ ચલાવો."

આજે જે ચંદ્રયાન, મંગળયાન આદિ શીઘ્રગામી તથા યુદ્ધક્ષેત્ર સાથે સમ્બન્ધિત વિવિધ દ્રોણ, ટેંક, સ્ટીમર તથા અનેક વિસ્મયજનક આયુધોનું નિર્માણ થયું છે એ બધું અગ્નિ સમ્બન્ધિત વિદ્યાને કારણે જ છે. અગ્નિમાં પ્રકાશ છે, જ્વલનશક્તિ છે, દ્રુતગતિ છે, વિદ્યુતરૂપી ઊર્જા છે. પ્રકાશની તીવ્રતમ ગતિથી આપણે સુપરિચિત છીએ . એટલે ડેસ્કટૉપ, લૈપટૉપ, પામટૉપ અને દરેક હાથમાં હજર મોબાઈલે જે અદ્ભૂત ક્રાન્તિ સર્જી છે, એમાં આજ અગ્નિવિદ્યા છે એકમાત્ર વિચિત્ર વિદ્યુદ્વિદ્યા છે. વર્તમાનપત્ર, પુસ્તકો, માસિક પત્રિકાઓ અને ટી. વી. ના સ્થાને આજે ન્યૂજ મીડિયા, સોશિયલ મીડિયા, વ્હોટ્સએપ, ફેસબુક, મેસેન્જર, યૂ ટ્યૂબ, ટ્વીટર આદિની જે બોલબાલા છે એ બધું આ વિદ્યુતનો જ ચમત્કાર છે. અને આ ચમત્કારને નમસ્કાર છે.

"અગ્નિમ્ ઈળે પુરોહિતમ્".

समाचार दर्पण

महर्षि दयानन्द सरस्वती उपदेशक महाविद्यालय (टंकारा) एवम् महात्मा सत्यानन्द मुंजाल गुरुकुल

प्रवेश प्रारम्भ

अपने बच्चों को विद्वान्, चरित्रवान तथा संस्कारी बनाने के लिए ऋषि दयानन्द जी की जन्मभूमि टंकारा के गुरुकुल में प्रवेश करवायें। योग्यता-ब्रह्मचारी शरीर तथा मन से स्वस्थ होना चाहिए।

शैक्षणिक योग्यता- कक्षा 7, 8 अथवा 10वीं पास। केवल लड़कों के लिए गुरुकुल है। प्रवेश की संख्या सीमित है। अपना आवेदन 15 जून 2018 से पहले भेजने का कष्ट करें। गुरुकुल महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक हरियाणा से सम्बन्धित है। विशेष जानकारी के लिए पत्र लिखें अथवा गुरुकुल के आचार्य जी से फोन पर सम्पर्क करें और आने से पूर्व आचार्य जी से आज्ञा लेवें। (केवल आमन्त्रित ब्रह्मचारी ही आवें।) प्रवेश से पूर्व परीक्षा ली जायेगी। उत्तीर्ण ब्रह्मचारी ही प्रवेश के योग्य माने जायेंगे। कम्प्यूटर शिक्षा का भी प्रबन्ध।

अध्यापकों की आवश्यकता

प्राच्य व्याकरण पद्धति से, गुरुकुल झज्जर (हरियाणा) के माध्यमिक शिक्षा विभाग द्वारा अनुमोदित पाठयक्रम के अनुसार दसवी कक्षा तक साइंस और गणित पढ़ाने में योग्यता प्राप्त हो। ❑ शास्त्री वर्ग के छात्रों को काशिका, नामिक, अष्टाध्यायी आदि पढ़ा सके। अध्यापकों की आवश्यकता है। वेतनमान योग्यतानुसारा। आवास-भोजनादि की व्यवस्था गुरुकुल में निःशुल्क होगी। गुरुकुल के आचार्य जी को अपनी योग्यतादि के विवरण, चित्र एवम् आधार कार्ड सहित आवेदन भेजे।

आचार्य रामदेव जी

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा,
डाकखाना-टंकारा, जिला-मोरबी (गुजरात), पिन-363650, मो. 09913251448

टंकारा गुरुकुल के छात्र को स्वर्ण पदक

महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि टंकारा में चल रहे उपदेशक महाविद्यालय का छात्र ''रोहित कुमार'' दिल्ली विश्वविद्यालय में संस्कृत विषय से एम.ए. में टॉप किया है। मूल रूप से बिहार में समस्तीपुर जिला के अन्तर्गत ''मर्रा अमर'' गाँव का रहने वाला रोहित कुमार सन् 2007 से 2014 तक टंकारा में रहकर नवमी से शास्त्री किया। उसके बाद 2015 में दिल्ली से बी.एड. तथा 2015-2017 सत्र में हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली से एम.ए. किया, जिसमें वह विश्वविद्यालय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करके गुरुकुल टंकारा का नाम रोशन किया।

यज्ञ एवं भजन संध्या का आयोजन

डी.ए.वी कॉलेज प्रबन्धकर्तृ समिति नई दिल्ली की प्रेरणा से और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, राजस्थान के तत्वावधान में दिनांक 8 अप्रैल 2018 को सायंकाल 5 बजे से रात्रि 8 बजे तक यज्ञ एवं भजन संध्या का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम डी.ए.वी स्कूल के प्रांगण से बाहर जाकर कोटा नगर के उपक्षेत्र महावीर नगर तृतीय में आयोजित किया गया। इसमें विद्यालय के स्टाफ के साथ स्थानीय लोगो की भी उपस्थिति रही। विद्यालय प्राचार्या, क्षेत्रीय निदेशक एवं मंत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, राजस्थान श्रीमती सरिता रंजन गौतम ने कहा कि यह इस श्रंखला का प्रथम आयोजन है डी.ए.वी शहरभर में इस प्रकार के सामाजिक सरोकार से जुड़े आयोजन आगे भी करता रहेगा।

टंकारा ट्रस्ट के सामाजिक सेवा कार्यो हेतु रूग्ण वाहन प्राप्त

टंकारा गुरुकुल के आचार्य श्री रामदेव जी एवम् कार्यालय व्यवस्थापक श्री रमेश मेहता जी, दान स्वरूप रुग्ण वाहन के साथ।

टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री योगेश मुंजाल (सुपुत्र स्व. महात्मा सत्यानन्द मुंजाल) जी ने अपनी कम्पनी मुंजाल शोवा लिमिटेड, गुरुग्राम हरियाणा के सौजन्य से उपरोक्त ओमनी मारूति रुग्ण वाहन टंकारा ट्रस्ट द्वारा दी जा रही निःशुल्क सेवा हेतु दान स्वरूप दी।

टंकारा मौरवी राजकोट, राजमार्ग पर स्थित है लेकिन अधिक रुग्ण चिकित्सा सेवाएं स्थानीय उपलब्ध ना होने के कारण ग्राम वासियों को राजकोट एवम् मौरवी अस्पताल पहुंचाने हेतु यह सेवा निःशुल्क उपलब्ध करायी जाती है। टंकारा ट्रस्ट परिवार की ओर से श्री योगेश मुंजाल एवम् मुंजाल शोवा लिमिटेड की सभी उच्च अधिकारियों को धन्यवाद।

20वां आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन दिल्ली में सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान** में 20वां आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन आर्य समाज कीर्ति नगर में 6 मई 2018 को भव्य रूप में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में विभिन्न प्रान्तों के आर्य परिवारों से आए युवक-युवतियों ने पूर्ण आत्मविश्वास के साथ अपना परिचय देने के साथ-साथ उन्हें कैसा जीवन साथी चाहिए इस विषय में खुलकर अपने विचार रखे। राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि सम्मेलन में मुख्य अतिथि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने अपने संबोधन में कहा कि वर्तमान युग में आर्य मर्यादानुरूप महिला सशक्तिकरण का सफलतम माध्यम है यह परिचय सम्मेलन। युवतियों का विवाह के लिए मंच पर आकर परिचय देना और उनके अंदर के आत्मविश्वास को बढ़ाने वाला कार्य है। साथ ही इच्छानुरूप जीवन साथी का चयन स्त्री स्वतंत्रता एवं सशक्तिकरण की ओर एक महत्त्वपूर्ण कदम है। कार्यक्रम में आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुनदेव चड्डा ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि प्रथम सम्मेलन से बीसवीं सम्मेलन तक पहुंचने की हमारी यात्रा की जो गति रही वह निश्चित रूप से सबके लिए प्रेरणादायी है कि अल्यल्प समय में हम इस उपलब्धि तक पहुंच सके। इसके लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की जितनी भी सराहना की जाए उतनी ही कम है। आर्य समाज कीर्ति नगर के मंत्री श्री सतीश चड्ढा ने कहा कि यह हमारे लिए गौरव की बात है कि 20वें सम्मेलन की इन सीढियों पर चढते हुए कीर्ति नगर में यह दूसरी बार आयोजित किया जा रहा है सम्मेलन की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि युवक-युवतियों ने बिना दहेज लिए विवाह करने के संकल्प व्यक्त किये। इस अवसर पर आर्य समाज कोटा द्वारा प्रकाशित जीवन है अनमोलज् पत्रक का मुख्य अतिथि द्वारा विमोचन किया गया। मुख्य अतिथि ने पत्रक के मुख्य बिन्दुओं सकारात्मक सोच, मनुष्य जीवन के महत्त्व, तनाव से दूर रहें, अपनी क्षमताओं को पहचाने इत्यादि पर प्रकाश डाला।

महात्मा चैतन्यमुनि एवं मां सत्यप्रियायति जी सम्मानित

डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली द्वारा प्रतिवर्ष महात्मा हंसराजजी के जन्मदिवस के अवसर पर वैदिक धर्म के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य करने वाले संन्यासियों एवं महात्माओं को सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष अन्य विद्वानों के साथ-साथ महात्मा चैतन्यस्वामी एवं मां सत्यप्रियायति जी को भी चंडीगढ़ में इस समारोह में सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि महात्माजी एवं यति जी ने पूर्ण समर्पित भाव से वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में अपना जीवन समर्पित किया हुआ है तथा अनेक आश्रमों का कार्य भी देख रहे हैं। महात्माजी वरिष्ठ साहित्यकार एवं लोकप्रिय एवं सैद्धान्तिक वैदिक प्रवक्ता के रूप में भी जाने जाते हैं।

क्या करो ?

सत्य बोलो, धर्म का आचरण करो
स्वाध्याय में आलस्य न करो।

ऋग्वेद परायण महायज्ञ का आयोजन

आर्य समाज मंदिर पटियाला में सात दिवसीय ऋग्वेद परायण महायज्ञ का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप पधारे विनोद भारद्वाज-मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं विशेष अतिथि सुरेंदर मोहन तेजपाल-अधिष्ठाता साहित्य विभाग, आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब विशेष तोर पर पहुंचे. अपने संबोधन में उन्होंने महर्षि दयानंद और आर्य समाज दुआर भारत की आजादी में दिए महत्वपूर्ण योगदान को याद किया और कहा के वेद मार्ग पर चलते हुए आर्य समाज ने देश की आजादी और समाज सुधार के लिए कई आदोलन किये है। उन्होंने ने विशेष रूप से आर्य समाज पटियाला की पूरी टीम के वेद परचार सहित सभी सामाजिक उन्नति के लिए किये कार्यों की प्रशंशा की

इससे पहले कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ के साथ किया गया आर्य समाज के पदाधिकारी एवं सदस्यों ने विश्व के कल्याण की मंगल कामनाये करते हुए यज्ञ अग्नि में आहुतियाँ प्रदान की। इस सात दिवसीय ऋग्वेद परायण महायज्ञ मे यज्ञ ब्रह्मा एवं प्रमुख पर्वक्ता आचार्य हरी शंकर अग्निहोत्री जी ने कहा कि संसार को समझने के लिए ज्ञान की आवश्यकता है और ज्ञान के रूप में सृष्टि के सबसे प्राचीन ग्रन्थ 'वेद' हमें उपलब्ध है।

आर्य समाज के प्रधान राज कुमार सिंगला ने सभी का धन्यवाद प्रगट किया। मुख्या अतिथि तथा विशेष अतिथि को शाल और समृति चिन्ह भेंट किये।

योग-ध्यान, साधना शिविर सम्पन्न

जम्मू कश्मीर की सुरम्य एवं मनोरम पहाड़ियों में स्थित **आनन्दधाम आश्रम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू काश्मीर** में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्यस्वामी जी की अध्यक्षता एवं पूज्य मां सत्यप्रियायतिजी के सान्निध्य में दिनांक 8 से 15 अप्रैल-2018 तक निःशुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, जम्मू काश्मीर, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, दिल्ली, मध्यप्रदेश, उत्तराखंड तथा उड़िसा आदि राज्यों से आए हुए लगभग एक सौ शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर में लगभग सोलह वानप्रस्थी व संन्यासी भी पधारे। शिविर में अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि का क्रियात्मक अभ्यास कराया गया। इस अवसर पर मां सत्यप्रियायति जी के तथा अन्य गायक-गायिकाओं के भजन हुए। महात्मा जी के सारगर्भित वैदिक प्रवचन हुए। इस अवसर पर पूज्य महात्मा जी के ब्रम्हत्व में सामवेद परायाण यज्ञ भी सम्पन्न हुआ। सेवानिवृत्त, मुख्य सचिव श्री कुण्डल, जम्मू काशमीर विधान सभा के अध्यक्ष श्री कवीन्द्र जी तथा स्थानीय विधायक श्री पवन आदि की गरिमामयी उपस्थिति भी रही।

चुनाव समाचार

आर्य समाज पटेल नगर, नई दिल्ली-110008

प्रधान- श्री जितेन्द्र आर्य   **मन्त्री**- श्री अदित्य आहूजा

कोषाध्यक्ष- श्री बलराज तनेजा

पुस्तक समीक्षाः भागवत दर्पणः योगेश्वर श्रीकृष्ण

वेदों का उपयोग केवल यज्ञ के लिए ही है। इस मिथ्या अन्धविश्वास के कारण वेदों के उपदेश व प्रवचन के स्थान पर उपनिषद् गीता और पुराणों की कथा, प्रवचन आदि प्रारम्भ हो गये और इनमें श्रीमद् भागवत पुराण की महिमा का गुणगान तथा इसकी कथाओं का प्रचलन जोर शोर से करके अनके प्रकार का पाखण्ड, अन्धविश्वास फैलाया जा रहा है। कथाकार अपनी मन लुभावनी भाषा में श्रीकृष्ण की रासलीला का वर्णन करके भोगवाद को प्रश्रय दे रहे हैं और अपनी स्वार्थ पूर्ति कर रहे हैं। श्रीकृष्ण के आदर्श चरित्र पर अनेकानेक मिथ्या लांछन भागवत पुराण में लगाये हैं। जिससे योगेश्वर श्रीकृष्ण के आदर्श जीवन को लोग भूल गये हैं। इस विषय में ऋषि दयानन्द ने लिखा है कि ''श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्णजी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम किया हो ऐसा नहीं लिखा और इस भागवत के बनाने वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाये हैं। दूध, दही, मक्खन की चोरी और कुब्जा दासी से समागम, परस्त्रियों से रासलीला क्रीड़ा आदि मिथ्या दोष लगाये हैं। इसको पढ़ पढ़ा, सुन सुनाके अन्य मतवाले श्रीकृष्ण जी की बहुत सी निंदा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्रीकृष्ण जी सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्योंकि कर होती?'' आप ऋषि दयानन्द के इन शब्दों को पढ़कर अनुभव कर सकते हैं कि भागवत के कारण योगेश्वर श्रीकृष्ण की पूजा नहीं अपमान हो रहा है। इसका प्रभाव मनुष्यों के जीवन चरित्र पर पड़ रहा हैं। कृष्ण जीवन की सही व्याख्या इस पुस्तक में वर्णित की गई के आदरणीय श्री सोमदेव शास्त्री जी का यह अनुपम प्रयास आप सभी को प्रभावित कर योगीराज जी श्री कृष्ण के प्रति सत्य को सामने रखेगी। इसलिए भागवत की कथा करने वालों को इस विषय में गम्भीरता से विचार करना चाहिए। किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना या किसी की हानि करना या किसी को अपमानित करने का हमारा लेश मात्र भी अभिप्राय नहीं है। केवल मात्र सत्यता से अवगत कराना ही हम चाहते हैं। इस पुस्तक का प्रथम संस्करण सन् 2011 में आर्य समाज बड़ा बाजार कोलकाता की ओर से प्रकाशित हुआ था।

पुस्तक प्राप्ति स्थान- डॉ. सोमदेव शास्त्री, 309, मिल्टन अपार्टमेन्ट, जुहू कोलिवाड़ा, मुम्बई-41, मोबाइल-09869668130

सन्दीप आर्य- बी-1, फरहीन सोसायटी, वाकोला सान्ताक्रुज (पूर्व), मुम्बई-400055, मोबाइल-9969037837

लेखकः- डॉ. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई

ग्रीष्म कालीन शिविर सम्पन्न

<u>आर्य समाज जूनागढ़ गुजरात</u> में 30.4.2018 से 6.5.2018 सात दिवसीय समर केम्प में 140 बच्चों ने भाग लिया। इसमें योग आसन कराटे लाठी तलवार दंबेश लेझिम राईफल शुटिंग एडवेंचर वैदिक् यज्ञ वैदिक गणित माइन्ड पावर अंधाश्रद्धा निवारण के वैज्ञानिक प्रयोग तीरंदाजी विविधा खेल सूर्य नमस्कार अकस्मात निवारण आदि का कार्यक्रम आयोजित किया गया। अंतिम दिन जूनागढ़ के मेयर सांसद गुजरात आर्य सभा के पदाधिकारियों अभिभावकों एवं प्रबुध्ध लोगों के बीच केम्प का समापन समारोह बड़े उत्साह से मनाया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रवीणा आर्य और दीपक आर्य ने किया।

करें प्रणाम

प्रातः उठकर सबसे पहले नमस्कार मन्त्र का स्मरण कीजिए एवं मुस्कुराइए। दूसरा, अपने माता-पिता एवं सभी बड़ों को प्रणाम कीजिए। प्रणाम करने में संकोच न करें। यदि आज यह आदत नहीं है तो आदत डाल लें। दो-चार दिन संकोच रहता है, फिर यह आदत हमको स्वयं के लिए विनम्र बना देगी। मंदिर में मूर्ति को, स्थानक में गुरु महाराज को वंदन कर लेते हैं, किन्तु हमारे जन्मदाता माता-पिता को प्रणाम करने में संकोच क्यों रहता है? अपने से सभी बड़ों को प्रणाम करें।

जब हम बड़ों को प्रणाम करते हैं तो उनका हाथ आशीर्वाद के लिए उठता है। कोई भी हमको प्रणाम करते समय गलत आशीष नहीं देता। मन में यदि झगड़े के भाव हैं तो कलह कमजोर होकर प्रेम में परिणत हो जाएगा। जो प्रातः उठकर बड़ों से मिलने पर पाँव छूता है, वह बहुत भाग्यशाली है। उसके सिर पर आशीर्वाद एवं स्नेह की छत्र-छाया रहती है। **- श्रीमती आशा धीरेन्द्र बॉठिया**

ई-50, गार्डन स्ट्रीट, लाल बहादुर नगर, जयपुर (राजस्थान)

शोक समाचार

माता शान्ति आर्या नहीं रहीं

<u>**श्री सत्यपाल आर्य (सहमन्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवम सचिव डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी)**</u> की पूज्यनीय माता श्रीमती शान्ति आर्या, 90 वर्ष की आयु में, 25 अप्रैल, 2018 को अपना पार्थिव शरीर छोड़ गई। माता श्रीमती शान्ति आर्या अत्यंत धर्मपरायणा, यज्ञ को समर्पित, आस्तिकता से भरी-पूरी, परिवार को अत्यंत पुरुषार्थ और संघर्ष से पालने वाली एक आदर्श महिला थी। माताजी श्री संतलाल आर्य (पति-आयु 92 वर्ष), श्री सुभाष आर्य एवं श्री सत्यपाल आर्य (पुत्र), श्रीमती सरला, सुरक्षा, आशा और शारदा (पुत्रियाँ) के रूप में भरा-पूरा परिवार अपने पीछे छोड़ गई हैं। अपने पति श्री संतलाल जी, जो आर्य समाज और वैदिक जीवन-पद्धति के प्रति मनसा-वाचा-कर्मणा समर्पित हैं, उनके आदर्शो को जीवित रखने में माता शान्ति आर्या ने जीवन-भर सहयोग किया। यह शरीर छोड़ने से बहुत दिन पहले माता शान्ति आर्या ने ये संकल्प लिया था कि मरणोपरांत उनका पार्थिव किसी मेडिकल कॉलेज को दान कर दिया जाए। उनके इस संकल्प के अनुरूप ही उनका पार्थिव शरीर 'महिला मेडिकल कॉलेज' खानपुर को शिक्षा हेतु भेज दिया गया।

टंकारा ट्रस्ट परिवार दिवंगत आत्मा की शांति और सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है।

Nice Quotes

1. The Plus Symbol is made with a pair of minus Symbols. So all negative things can be shaped as positive. The only requirement is positive attitude.
2. "Minimum" requirement and "Maximum" adjustment are two steps for happy and successful life.

- 17/729 Chopsani Housing Board, Jodhpur-342008 Raj

(पृष्ठ 1 का शेष)

अगर साफ करले तू दिल को, तो यही घर स्वर्ग से अच्छा है।

महात्मा हंसराज जी महान कर्मयोगी थे। समाज सेवा, साहित्य सृजन, अध्यापन लोकमंगल में सदा संलग्न थे। मेरा मानना है कि सच का सामना हमें सामने आकर करना चाहिए, पीछे से नहीं। सच वह दर्पण है जो अपना चेहरा हमें दिखाता है और वह हमारा भी चेहरा ही देखना चाहता है, पीठ नहीं।

जीवन की अवधि का पता नहीं होता, पर हमें करने के लिए जो काम मिला है, उसका हमें पता होना चाहिए। उसे हमने पूरा करना है। जीवन काल में यदि पूरा न भी हो तो भी संतोष होना ही चाहिए कि हमने श्रम और लगन में कोई कसर नहीं छोड़ी। चुनौतियों का सामना उनसे भाग कर नहीं जाग कर करना चाहिए। महात्मा हंसराज जी के जीवन में अनेक कष्ट आये, विपत्तियाँ आयी परन्तु वे विचलित नहीं हुए। हमें भी चाहिए कि उनके जीवन से प्रेरणा लेकर आगे बढ़े। संध्या, सेवा, स्वाध्याय, संस्कार, सत्संग, सत्य को आत्मसात् करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के देहावसान के बाद महात्मा हंसराज जी ने सोचा कि आर्यसमाज की विचारधारा से पूर्ण युवक ही ऋषि के कार्य व स्वप्न को पूरा कर सकता है। उन्होंने ऋषि के कार्य को पूरा करने के लिए डी.ए.वी. स्कूल की स्थापना की। वेदप्रचार मण्डल द्वारा वेदों का प्रचार किया एवं यज्ञ, समाज सुधार के कार्यो द्वारा आर्यसमाज फला फूला। आज फिर ऐसे महापुरुषों की आवश्यकता है जो समाज के लिए महात्मा हंसराज की तरह तन-मन और धन अर्पण कर सकें। आइए महात्मा हंसराज जी के बताए हुए मार्ग पर चलते हुए अज्ञान, अन्याय, अभाव को दूर करने के लिए कटिबद्ध हों।

इक न इक शम्मा, अंधेरे में जलाये रखिये।
सुबह होने को है, माहौल बनाये रखिये।।
जपत जपत नित्यं मन्त्रवत् तस्य नाम।
पठत पठत पुण्यं भ्रातरस्तच्चरित्रम्।
भवत भवत योग्यास्तस्य शिष्यत्वमाप्तुम्
जयतु भुवि यथाडसौ हंसराजो महात्मा।।

उस महात्मा के गुणों को धारण करों, उसके चरित्र को बार पढ़ो और करो प्रयास उसके नाम लेवा बने रहने की पात्रता प्राप्त करने के लिए जिससे वह महापुरुष संसार में जयी हो-उसका नाम अमर रहे।

प्रवेश प्रारम्भ

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया राजस्थान राज्य के अलवर जिले में राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है। यह गुरुकुल दिल्ली से 100 किलोमीटर एवं जयपुर से 150 किलोमीटर की दूरी पर है। यह गुरुकुल वर्तमान में कन्याओं की शिक्षा का सर्वोत्तम केन्द्र है। अतः समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि गुरुकुल में बालिकाओं को प्रवेश दिलाकर आर्ष सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में योगदान दें।

सम्पर्क करें :
आचार्य प्रेमलता, आर्ष कन्या गुरुकुल,
दाधिया, अलवर, राजस्थान-301401,
फोन : 01495-270503, मो. 09416747308

(पृष्ठ 10 का शेष)

हार्वर्ड के अध्ययन का गलत सिद्ध करने के लिए आंकड़ों पर काम किया तो उसका सिर चकराने लगा। उसके आश्चर्य का तब ठिकाना नहीं रहा जब उसने यह देखा कि रक्तदान करने वाले लोग भी अपेक्षाकृत अधिक धनवान् हुए हैं। ब्रुक्स ने अमेरिकी अर्थव्यवस्था व दान की प्रवृत्ति के 50 वर्षो के आंकड़े जुटाये तो पाया कि जब अमेरिकी लोगों के दान की रकम एक प्रतिशत बढ़ी तो अमेरिकी बाजार में एक अरब डॉलर आते हैं, जिनसे नये 39 अरब डॉलर पैदा होते हैं। इतना ही नहीं ब्रुक्स ने फ्रान्स, जर्मनी व इटली के साथ तुलनात्मक अध्ययन भी किया इन सबसे आश्चर्य के सागर में गोते लगाते हुए ब्रुक्स अपने मनोवैज्ञानिक मित्र के पास जाकर इसका रहस्य पूछने लगे तो मित्र ने कहा-''हम यह बात वर्षो से जानते हैं। तुम अर्थशास्त्री केवल पैसा देखते हो, पैसा जो खुशी लाता है, हम उसे देखते हैं। खुश व्यक्ति अधिक उत्पादक होता है, अधिक काम करता है।''

सम्भवतः आज के स्वार्थपूर्ण युग में जीनेवाला मानव युग में जीनेवाला मानव इन तथ्यों, तर्को पर भरोसा न कर सके, लेकिन इस सच को झुठलाने के लिए किसी के पास एक भी तथ्य व तर्क नहीं है। हम भारतीयों को गर्व होना चाहिए कि हमारी जीवनशैली से जुड़ी वेदोक्त मानवीय मान्यताएँ आज भी वैज्ञानिक अनुसन्धानों, सामाजिक शोध-निष्कर्षो व अर्थ-शास्त्रीय आंकड़ों आदि, सभी दृष्टियों से सत्य ही सिद्ध हो रही हैं। अगर इतने पर भी हमारी बुद्धि इस ईश्वरीय व्यवस्था को, इस शाश्वत सिद्धान्त को, इस देने के सुख को स्वीकार न कर सके तो यह हमारा दुर्भाग्य ही होगा। सुधी पाठक इन तथ्यों, तर्को को प्रेरणा बनाकर, भार बन चुके जीवन और निरन्तर निर्बल होती जा रही जीवनी-शक्ति को, प्राणदायी ऊर्जा के रूप में बदलने के लिए दैवीय व्रतों को जीवन का अंग बना कर, देने में सुख के सिद्धान्त को व्यवहार में लाकर इसे एक ऐसा आन्दोलन बनाएं जिससे जुड़कर जीवन से थका आज का मानव सौ वर्ष की पूर्णायु के लिए पुनः लालायित हो उठे। आज सत्ता के शीर्ष पदों पर बैठे लोगों के कुटिल व्यवहार और उनके अन्याय से खिन्न मानव का सम्भवतः परमात्मा की न्याय व्यवस्था से भी विश्वास उठ चुका है। ऐसे में हम तो यही कहेंगे कि परमात्मा की कोई व्यवस्था कभी नहीं बदलती। दान देना, दुःखियों की सेवा-सहायता करना, अभावग्रस्त, असहाय निर्धनों की निःस्वार्थ सहायता करना ऐसे काम हैं, जिनका सुखद सुफल ईश्वर के अधीन है। नालन्दा विश्व विद्यालय के पं. शान्तिदेव के प्रेरक वाक्यों के साथ हम लेखनी को विराम दे रहे हैं। शान्ति देव ने कहा था-'संसार में जो भी सुख है, वह दूसरों के लिए सुख देने के प्रयासों, कामनाओं से आया है। जबकि संसार में जो भी दुःख-दुर्गति हैं, वे स्वयं के लिए सुख पाने की कामना से उत्पन्न हुये हैं।'

पुनश्च-

आपदां कथितः पन्था इन्द्रियाणाम् असंयमः।
तज्जयः सम्पदां मार्गो, येनेष्टस्तेन गम्यताम्।।

इन्द्रियों को सांसारिक विषयों में खुला छोड़कर खाने-पीने आदि में ही लगे रहना आपत्तियों को बुलावा देना है, तथा इनको संयम में रखकर तप त्याग और सेवा का जीवन जीना सम्पत्तियों का मार्ग है। सुधी पाठक, दोनों मार्ग खुले पड़े हैं, जो अच्छा लगे उसे ही स्वीकार कर लो।

(पृष्ठ 2 का शेष)

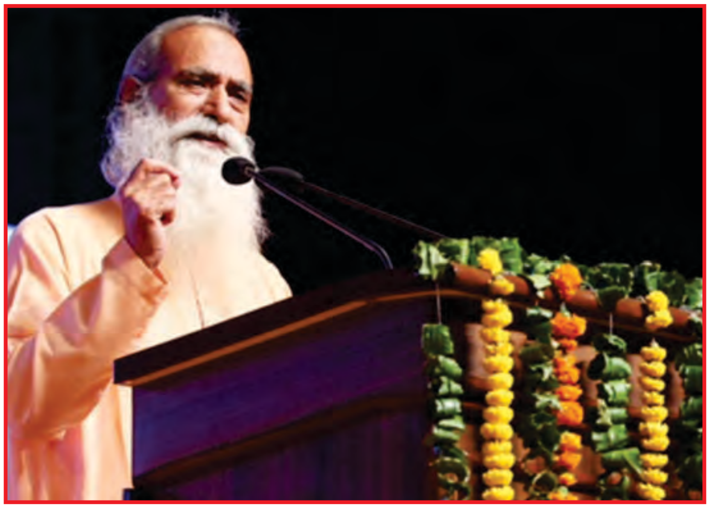

महात्मा चैतन्य मुनि सभा को सम्बोधित करते हुए

लिए पुरस्कृत किया जाता है।

परेड ग्राऊंड, सेक्टर-5, पंचकुला में आयोजित 'समर्पण दिवस' समारोह में 8 वैदिक विद्वानों एवं 9 आर्य संन्यासियों को सम्मानित किया गया। समारोह में हरियाणा के पुलिस महानिदेशक श्री बी.एस. संधु एवं पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला के कुलपति डॉ. बी. एस. सामाजिक विकास एवं शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए विशिष्ट सम्मान से सम्मानित किए गए। आर्य गर्ल्स सीनियर सैकेण्डी स्कूल, लोहागढ़, अमृतसर की प्रधानाध्यापिका श्रीमती सुनीता शर्मा, एम.आर.ए. डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सोलन की प्रिंसिपल श्रीमती अनुपमा शर्मा एवं डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, लुधियाना की प्रिंसिपल श्रीमती जसविंदर कौर सिंधु को 'महात्मा हंसराज सम्मान' से सम्मानित किया गया। डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सेक्टर-8, चंडीगढ़ की छात्रा भूमि सावंत, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, नवी मुम्बई की छात्रा रहिता कासिराज एवं डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, लुधियाणा की छात्रा गुनप्रीत कौर को पढ़ाई-लिखाई में विशिष्ट प्रतिभा प्रदर्शन के लिए पुरस्कृत किया गया। इन्होंने बोर्ड की परीक्षाओं में क्रमशः 99.4, 98.4 एवं 98. 4 प्रतिशत अंक प्राप्त किए थे।

खेल-कूद में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार प्राप्त करने वाले 8 खिलाड़ी भी सम्मानित किये गए। इनमें हाल ही में सम्पन्न राष्ट्रमंडल खेलों में टेबल टेनिस में 4 पदम प्राप्त करने वाली मनिका बत्रा एवं निशानेबाजी में स्वर्ण पदक विजेता श्रेयासी सिंह भी शामिल है। क्रमशः हंसराज मॉडल स्कूल, दिल्ली एवं हंसराज कॉलेज, दिल्ली की भूतपूर्व छात्राएं हैं। इनमें विशेष योग्यता प्राप्त छात्रा मलिका हांडा भी शामिल है। डी.ए.वी. कॉलेज, जालंधर की विद्यार्थी है।

महात्मा हंसराज के जीवन पर आधारित नृत्य-नाटिका 'परमानन्द' की प्रस्तुति 'समर्पण दिवस' का मुख्य आकर्षण थी। इस नृत्य नाटिका में लगभग 700 विद्यार्थियों ने अपने नृत्य और अभिनय से उपस्थित जन समुदाय को मन्त्र-मुग्ध कर दिया। इसका निदेशक सुप्रसिद्ध कोरियोग्राफर श्री उदय सहाय ने किया।

इस अवसर पर महात्मा चैतन्य मुनि एवम् मां सत्यप्रियायति जी सम्मानित

कार्यक्रम का प्रारंभ दीप प्रज्जवलन एवम् डी.ए.वी. गान से हुआ। 'समर्पण दिवस' में आर्य संत चैतन्य मुनि ने आशीर्वाद दिया। परेड ग्राऊंड, सेक्टर-5, पुंचकुला में आयोजित इस समारोह में देश भर से आए वैदिक विद्वानों, आर्य संन्यासियों, बुद्धिजीवियों, शिक्षाविदों एवं विद्यार्थियों ने भारी संख्या में भाग लिया।

महात्मा हंसराज जयन्ती के अवसर पर आयोजित समर्पण दिवस ''परम आनन्द' नृत्य नाटिका प्रस्तुत करते डी.ए.वी. की छात्राएं

मित्र कौन ?

प्रवास में विद्या मित्र होती है
घर में विदुषी पत्नी मित्र होती है
रोगी के लिए औषधि मित्र होती है
और मरने वाले का धर्म मित्र होता है।

टंकारा समाचार जून 2018
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2018-19-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2018-20
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-06-2018
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.05.2018

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय